सत्रहवां अंक

भावना

2025-26

महा निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय, चेन्नै,
शाखा कोच्ची

कार्यालय में आयोजन

15 अगस्त 2025

ऑडिट दिवस 2025

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भावना

2025-26

महा निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय, चेन्नै,
शाखा कोच्ची की वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका

भावना

महा निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय, चेन्नै, शाखा कोच्ची की वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका

प्रकाशन	वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका
प्रकाशक	महा निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय, चेन्नै, शाखा कार्यालय, कोच्ची
अंक	सत्रहवां
मुखपृष्ठ	केरल का सुंदर दृश्य
अंतिम पेज कवर	रयन मैत्यू की चित्रकला
मूल्य	राजभाषा के प्रति निष्ठा
मुद्रणालय	रेयनबो प्रन्टर्स

पत्रिका परिवार

मुख्यसंरक्षक

श्री को प आनंद

महा निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चेन्नै

संरक्षक

श्री के शशिधर

उप निदेशक (सी एस/जी एस टी) II

परामर्शदाता

श्रीमती उषा श्रीकुमार

उप निदेशक (डीटी) II

संपादक

श्रीमती सिन्धु नायर

सहायक निदेशक (राजभाषा)

संदेश

को प आनंद
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नई

मै, अत्यंत गर्व और प्रसन्नता के साथ हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका "भावना" के 17 वें अंक का लोकार्पण कर रहा हूँ।

पत्रिका रचनात्मक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम होती है। है। हिंदी, जो हमारी राजभाषा है, विभाग के अंतर्गत कार्यालयों एवं कर्मचारियों के बीच तथा संघ सरकार के अन्य कार्यालयों से संवाद स्थापित करने का प्रभावी साधन प्रदान करती है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है, और "भावना" का यह नया अंक उस दर्पण का उज्ज्वल प्रतिबिंब है। इस पत्रिका में कार्यालय के कर्मचारियों द्वारा विभिन्न विषयों पर लिखे गए रोचक एवं ज्ञानवर्धक लेख शामिल हैं।

मैं उन सभी अधिकारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ जिन्होंने हिंदी तथा हिन्दीतर भाषी क्षेत्रों से इस पत्रिका के लिए लेख प्रस्तुत किए हैं। विशेष रूप से मैं उन साथियों की सराहना करता हूँ जिन्होने मातृभाषा हिंदी ने होने के बावजूद, हिंदी में लेख देकर इस प्रयास में अपना योगदान दिया है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करेगी तथा विचारों के आदान-प्रदान और सृजनात्मक चिंतन को बढ़ावा देगी।

इस अंक के प्रत्येक पृष्ठ पर टीम के परिश्रम और समर्पण की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। "भावना" के सफल प्रकाशन के लिए संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई।

संदेश

के शशिधर
उप निदेशक (सीएस/जीएसटी) II

कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'भावना' का प्रकाशन एक सराहनीय और प्रेरणादायक पहल है। यह प्रयास यह दर्शाता है कि हमारा कार्यालय राजभाषा हिंदी के संवर्धन और विकास के प्रति पूर्णतः सजग है। भारत जैसे बहुभाषी देश में हिंदी की भूमिका एक संपर्क भाषा के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह प्रशासन और जनता के बीच सेतु का कार्य करती है तथा राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाती है। राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन से ही हम सरल, सुगम और समावेशी प्रशासन की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

यह पत्रिका निश्चित रूप से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान देगी और कार्यालय की रचनात्मक गतिविधियों को नई दिशा प्रदान करेगी। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रयोग को और अधिक प्रोत्साहित करेगी तथा कर्मचारियों के बीच हिन्दी के प्रयोग का संवर्धन करेगी । पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी को मेरी बधाईयां ।

संदेश

उषा श्रीकुमार
उप निदेशक (डीटी) II

कार्यालय की हिंदी पत्रिका " भावना " के सत्रहवें अंक का प्रकाशन एक अत्यंत प्रशंसनीय प्रयास है। यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार तथा सरकारी कार्यों में इसके सहज एवं प्रभावी प्रयोग को प्रोत्साहित करने का उद्देश्य रखती है। इस प्रकार के प्रकाशन न केवल कर्मचारियों के बीच हिंदी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को सुदृढ़ करते हैं, बल्कि इसके सरल प्रयोग के प्रति जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ हिंदी में कार्य करने की दक्षता को भी विकसित करते हैं। इस सार्थक प्रयास में योगदान देने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हार्दिक सराहना की जानी चाहिए।

पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए मैं अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त करती हूँ और यह विश्वास व्यक्त करती हूँ कि यह नवाचार के लिए एक प्रभावी मंच सिद्ध होगी। आशा है कि " भावना " भविष्य में भी इसी प्रतिबद्धता और उत्साह के साथ नियमित रूप से प्रकाशित होती रहेगी।

संपादकीय

भाषा किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती है। यह केवल विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति, चेतना और राष्ट्रीय पहचान की संवाहक भी है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश के विकास में भाषाओं की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। हमारे देश की बहुभाषिकता उसकी सबसे बड़ी शक्ति है, जिसने सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक समृद्धि और लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ किया है।

स्वतंत्रता के बाद राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में भाषा ने एक सेतु का कार्य किया है। हिंदी, एक सामान्य संपर्क भाषा के रूप में, देश के विभिन्न भाषायी क्षेत्रों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आई है। प्रशासन, शिक्षा, साहित्य और जनसंचार के माध्यम से हिंदी ने विकास की धारा को जन-जन तक पहुँचाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। सरल और सहज भाषा में शासन और जनता के बीच संवाद स्थापित करना सुशासन की अनिवार्य शर्त है, और इस दिशा में हिंदी की भूमिका निर्विवाद है।

इसके साथ ही यह भी उतना ही आवश्यक है कि हम भारत की सभी भारतीय भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन और विकास पर समान रूप से ध्यान दें। प्रत्येक भाषा अपने साथ एक विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत, ज्ञान परंपरा और जीवन दृष्टि लेकर चलती है। किसी एक भाषा का विकास तभी पूर्ण माना जा सकता है जब अन्य भाषाएँ भी समान सम्मान और अवसर प्राप्त करें। भाषायी विविधता को बनाए रखना राष्ट्रीय एकता के विरुद्ध नहीं, बल्कि उसका आधार है।

राजभाषा नीति का उद्देश्य भी यही है कि हिंदी के साथ-साथ सभी भारतीय भाषाओं को विकसित किया जाए और बहुभाषिक भारत की आत्मा को सशक्त बनाया जाए। हमारी यह पत्रिका इसी विचार को आगे बढ़ाने का एक छोटा-सा प्रयास है—जहाँ भाषा केवल शब्द नहीं, बल्कि राष्ट्र के विकास की साझी यात्रा का प्रतीक है।

अनुक्रमणिका

1	सीएजी कनेक्ट पोर्टलः डिजिटल लेखापरीक्षा शासन की दिशा में एक कदम	लीना सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
2	भाषाई विविधता : भारत की सांस्कृतिक शक्ति	सिन्धु नायर, सहायक निदेशक (रा भा)
3	लेखापरीक्षा में हितधारकों की सहभागिता का महत्व	के शशिधर, उप निदेशक (सीएस/जीएसटी) II
4	डेटा के युग में लेखापरीक्षा को सशक्त बनानाः 'डेटा साइंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और साइबर सुरक्षा' पर पाठ्यक्रम के माध्यम से आईआईटी मद्रास के साथ सीएजी की रणनीतिक पहल	विनीता कुमारी साह सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
5	नए ख्वाब (यू पी से केरल तक का सफर)	शाहनवाज़, आशुलिपिक
6	खाली जेब ने सिखाया जीवन का सबक	राकेश कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
7	सुकून का आशियाना	अंजू ऐब्रहाम, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
8	मेरे केरल का अनुभव	निशांत गौरव, लेखापरीक्षक
9	कोडईकनाल – पहोडों की राजकुमारी	ताराकांत पांडा, लेखापरीक्षक
10	क्रोध प्रबंधन	के शशिधर, उप निदेशक (सीएस/जीएसटी) II
11	इसे बाद में करूँगा	रघुराम वारियर, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
12	हिन्दी पखवाड़ा – रिपोर्ट	हिन्दी कक्ष
13	एक डिब्बा, कई भाषाएँ और एक आवश्यकता	नितीश कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
14	मौन संघर्ष	सिन्धु नायर, सहायक निदेशक (रा भा)
15	बढ़ती उम्र – एक पारंपरिक दृष्टिकोण	के ज्योति, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
16	"आप कितनी कीमत की उम्मीद कर रही हैं?"	आशा अजेष, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
17	कोट्टनकुलंगारा मंदिर - एक दिलचस्प भेंट	अनिता अरविंद, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
18	हमारे कार्यालय कोच्ची में ओणम समारोह	प्रदीप कुमार, डीईओ

सीएजी कनेक्ट पोर्टल: डिजिटल लेखापरीक्षा शासन की दिशा में एक कदम

सीएजी कनेक्ट पोर्टल, भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण डिजिटल पहल है, जिसका उद्देश्य लेखापरीक्षा प्रक्रिया का आधुनिकीकरण करना और सार्वजनिक वित्तीय जवाबदेही को सुदृढ़ करना है। ई-गवर्नेंस के इस युग में यह पोर्टल मैनुअल लेखापरीक्षा प्रणालियों से हटकर एक तकनीक-आधारित व्यवस्था की ओर परिवर्तन को दर्शाता है।

यह पोर्टल लेखापरीक्षा टिप्पणियाँ अपलोड करने, ड्राफ्ट पैराग्राफ जारी करने, लेखापरीक्षित इकाइयों से उत्तर प्राप्त करने तथा अनुपालन की निगरानी के लिए एक केंद्रीकृत मंच प्रदान करेगा । लेखापरीक्षा संचार मुख्यतः भौतिक फाइलों, ईमेल और मैनुअल फॉलो-अप पर निर्भर रहा है, जिससे विलंब और ट्रेसबिलिटी की कमी उत्पन्न हुई है। सीएजी कनेक्ट इन समस्याओं को दूर करेगा और लेखापरीक्षा आपत्तियों की रियल- टाइम ट्रैकिंग तथा पूर्ण डिजिटल लेखापरीक्षा ट्रेल सुनिश्चित करेगा।

इस पोर्टल का एक प्रमुख लाभ पारदर्शिता है। लेखापरीक्षा के सभी चरण–अवलोकन से लेकर निस्तारण तक–व्यवस्थित रूप से दर्ज किए जाएँगे, जिससे अस्पष्टता कम होगी और लेखापरीक्षकों तथा विभागा–दोनों की जवाबदेही में वृद्धि होगी। यह पोर्टल कार्यकुशलता भी बढ़ाएगा, क्योंकि समय-सीमाएँ स्पष्ट रूप से निर्धारित की जाएँगी और जिम्मेदारियाँ डिजिटल रूप से सौंप दी जाएँगी। इससे लेखापरीक्षा रिपोर्टों का समय पर फाइनलाईज़ेशन होगा और लेखापरीक्षा परिणामों की गुणवत्ता में सुधार होगा।

सीएजी कनेक्ट पोर्टल फील्ड कार्यालयों, मुख्यालय और लेखापरीक्षित इकाइयों के बीच बेहतर समन्वय को समर्थन प्रदान करेगा, जिससे देशभर में लेखापरीक्षा प्रक्रियाओं में एकरूपता सुनिश्चित होगी। यह सरकार के 'डिजिटल इंडिया' के व्यापक दृष्टिकोण के अनुरूप कागजरहित शासन को भी बढ़ावा देगा। सीएजी कनेक्ट पोर्टल के कार्यान्वयन में चुनौतियाँ

1. **डिजिटल कौशल अंतर (Digital Skill Gap)**
   कई अधिकारी अभी भी मैनुअल लेखापरीक्षा प्रक्रियाओं के अभ्यस्त हैं। डिजिटल वर्कफ़्लो से सीमित परिचय के कारण पोर्टल को अपनाने में धीमापन, डेटा अपलोड में त्रुटियाँ तथा पोर्टल की सुविधाओं का पूर्ण उपयोग न हो पाना जैसी समस्याएँ उत्पन्न होत हैं।

2. **परिवर्तन के प्रति प्रतिरोध (resistance to change)**
   फाइल-आधारित लेखापरीक्षा से पूर्णतः डिजिटल प्रणाली में परिवर्तन को लेकर पारंपरिक कार्यप्रणालियों के प्रति सहजता और बढ़ी हुई पारदर्शिता व जवाबदेही की आशंका के कारण प्रतिरोध देखा गया है।

3. **अवसंरचनात्मक बाधाएँ (infrastructure constraints)**
   कुछ कार्यालयों में अपर्याप्त इंटरनेट कनेक्टिविटी, पुराने हार्डवेयर और सिस्टम डाउनटाइम के कारण लेखापरीक्षा टिप्पणियों और विभागीय उत्तरों का समय पर अपलोड प्रभावित होता है।

4. **डेटा गुणवत्ता और मानकीकरण संबंधी समस्याएँ** (Data quality and standardisation issue) डेटा प्रविष्टि में असमानता, ऑडिटेड इकाइयों द्वारा अधूरे उत्तर, तथा मानक टेम्पलेट्स की कमी से लेखापरीक्षा ट्रेल की विश्वसनीयता प्रभावित होती है और रिपोर्ट के अंतिमकरण में विलंब होता है।
5. **बाहरी पोर्टलों के साथ समन्वय (Coordination with external portals)** सीएजी कनेक्ट और अन्य प्लेटफॉर्म जैसे OIOS/SAI पोर्टलों के बीच एकीकरण से जुड़ी चुनौतियाँ प्रयासों की पुनरावृत्ति और असंगत रिपोर्टिंग का कारण बन सकती हैं।
6. **साइबर सुरक्षा और डेटा संरक्षण जोखिम (Cybersecurity and data protection risks)** चूँकि यह पोर्टल संवेदनशील वित्तीय और लेखापरीक्षा संबंधी सूचनाओं को संभालता है, इसलिए डेटा सुरक्षा, एक्सेस नियंत्रण तथा साइबर खतरों से संरक्षण सुनिश्चित करना एक गंभीर चुनौती बना हुआ है।

सीएजी कनेक्ट पोर्टल की चुनौतियों को कैसे दूर किया जा सकता है

प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं:

1. **डिजिटल कौशल अंतर को पाटना (Bridging the Digital Skill Gap)**
- विशेषकर फील्ड स्तर पर कार्यरत अधिकारियों के लिए नियमित और व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
- सरल भाषा में उपयोगकर्ता पुस्तिकाएँ, वीडियो ट्यूटोरियल और FAQs तैयार किए जाएँ।
- प्रत्येक कार्यालय में "पोर्टल चैंपियन" नामित किए जाएँ, जो स्थानीय स्तर पर तकनीकी सहायता प्रदान कर सकें।

2. **परिवर्तन के प्रति प्रतिरोध को कम करना (Reducing Resistance to Change)**
- पारदर्शिता, कार्यकुशलता और कार्यभार में कमी जैसे दीर्घकालिक लाभों के प्रति अधिकारियों को जागरूक करने हेतु परिवर्तन प्रबंधन पहल अपनाई जाए।
- पोर्टल के प्रभावी और समयबद्ध उपयोग के लिए प्रोत्साहन एवं प्रशंसा की व्यवस्था की जाए।

3. **अवसंरचना को सुदृढ़ बनाना (Strengthening Infrastructure)**
- सभी लेखापरीक्षा कार्यालयों में विश्वसनीय इंटरनेट कनेक्टिविटी, अद्यतन हार्डवेयर और पर्याप्त आईटी सहायता उपलब्ध कराई जाए।
- ऑफलाइन डेटा तैयारी की सुविधा विकसित की जाए, जिससे कनेक्टिविटी बहाल होने पर डेटा स्वतः सिंक हो सके।
- तकनीकी समस्याओं के त्वरित समाधान हेतु समर्पित हेल्पडेस्क स्थापित किया जाए।

4. **डेटा गुणवत्ता और मानकीकरण में सुधार (Improving Data Quality and Standardisation)**
- समान और त्रुटिरहित डेटा प्रविष्टि के लिए मानक टेम्पलेट्स, ड्रॉप-डाउन मेनू और वैलिडेशन चेक्स लागू किए जाएँ।
- अपूर्ण उत्तरों से बचने हेतु कुछ फ़ील्ड्स को अनिवार्य बनाया जाए।
- असंगतियों की शीघ्र पहचान और सुधार के लिए नियमित डेटा गुणवत्ता लेखापरीक्षा किए

जाएँ।

5. **विभिन्न पोर्टलों के बीच बेहतर समन्वय (Better Coordination Among Different Portals)**

- OIOS/SAI जैसे संबंधित पोर्टलों के साथ सिस्टम एकीकरण या API आधारित डेटा साझा करने की दिशा में प्रयास किए जाएँ।
- कार्यों की पुनरावृत्ति से बचने के लिए स्पष्ट भूमिकाएँ, जिम्मेदारियाँ और वर्कफ़्लो निर्धारित किए जाएँ।
- सभी प्लेटफॉर्म्स पर समान रिपोर्टिंग मानक अपनाए जाएँ।

6. **साइबर सुरक्षा और डेटा संरक्षण सुनिश्चित करना (Ensuring Cybersecurity and Data Protection)**

- एन्क्रिप्शन, मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन और भूमिका-आधारित एक्सेस नियंत्रण जैसे मजबूत साइबर सुरक्षा उपाय लागू किए जाएँ।
- नियमित सुरक्षा लेखापरीक्षा और पेनिट्रेशन टेस्टिंग कराई जाए।
- उपयोगकर्ताओं को साइबर खतरों से सतर्क करने हेतु साइबर हाइजीन प्रशिक्षण प्रदान किया जाए।

समग्र रूप से देखा जाए तो सीएजी कनेक्ट पोर्टल सार्वजनिक लेखापरीक्षा प्रणाली को आधुनिक, पारदर्शी और उत्तरदायी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण सुधारात्मक पहल सिद्ध होगा। यद्यपि इसके कार्यान्वयन के दौरान डिजिटल कौशल, अवसंरचना, समन्वय तथा साइबर सुरक्षा जैसी चुनौतियाँ सामने आती रहेंगी, फिर भी निरंतर प्रशिक्षण, तकनीकी उन्नयन और स्पष्ट मानकीकरण के माध्यम से इन बाधाओं को दूर किया जा सकेगा। दीर्घकाल में यह पोर्टल न केवल लेखापरीक्षा प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और समयबद्ध बनाएगा, बल्कि सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन में विश्वास, पारदर्शिता और सुशासन को भी सुदृढ़ करेगा।

लीना सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भाषाई विविधता : भारत की सांस्कृतिक शक्ति

भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि वह किसी समाज के इतिहास, परंपराओं, मूल्यों और सामूहिक स्मृति की सजीव धरोहर होती है। विशेष रूप से क्षेत्रीय भाषाएँ किसी भी जनसमुदाय की सांस्कृतिक पहचान की सशक्त संरक्षक होती हैं। इनके माध्यम से स्थानीय ज्ञान, लोककथाएँ, मौखिक परंपराएँ, सामाजिक रीति-रिवाज़ और सदियों में विकसित जीवन–दृष्टि सुरक्षित रहती है। जब कोई भाषा समृद्ध होती है, तो उसके साथ संस्कृति भी पुष्पित-पल्लवित होती है; और

भारत विश्व के सर्वाधिक भाषाई विविधता वाले देशों में से एक है। यह विविधता संयोगवश नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता की अंतर्निहित विशेषता है। प्राचीन काल से ही यहाँ अनेक भाषाएँ और बोलियाँ एक-दूसरे के साथ सह-अस्तित्व में रही हैं तथा परस्पर प्रभाव और समृद्धि का माध्यम बनी हैं। तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी, असमिया, ओड़िया, उर्दू और अन्य भाषाएँ केवल क्षेत्रीय भाषाएँ नहीं है बल्कि समृद्ध साहित्यिक और बौद्धिक परंपराओं वाली पूर्ण सांस्कृतिक प्रणालियाँ हैं। करोड़ों भारतीयों के लिए उनकी मातृभाषा ही उनकी पहचान और आत्मीयता की प्रथम अभिव्यक्ति है।

इस भाषाई विविधता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान के निर्माताओं ने भाषाओं के प्रति एक समावेशी और संरक्षणात्मक दृष्टिकोण अपनाया। संविधान भाषाई एकरूपता को नहीं, बल्कि बहुलता को प्रोत्साहित करता है। संविधान के अनुच्छेद 29 और 30 भाषाई अल्पसंख्यकों को अपनी भाषा और संस्कृति के संरक्षण का अधिकार प्रदान करते हैं। अनुच्छेद 350 नागरिकों को संघ या राज्य में प्रयुक्त किसी भी भाषा में अपनी शिकायतें प्रस्तुत करने का अधिकार देता है। वहीं अनुच्छेद 350(क) राज्यों को प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधा उपलब्ध कराने का निर्देश देता है, जिससे भाषा और संस्कृति की निरंतरता सुनिश्चित होती है।

भावना

संविधान की अष्टम अनुसूची, जिसमें वर्तमान में 22 भाषाएँ सम्मिलित हैं, भाषाई समानता के प्रति राज्य की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। साथ ही, अनुच्छेद 351 के अंतर्गत हिंदी के विकास का प्रावधान किया गया है, जबकि अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति सम्मान और संरक्षण की भावना भी स्पष्ट रूप से निहित है। यह द्वैध दृष्टिकोण संविधान की संतुलित सोच को दर्शाता है–एक ओर राष्ट्रीय एकता के लिए हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में प्रोत्साहन, और दूसरी ओर क्षेत्रीय भाषाओं की गरिमा, विकास और अस्तित्व की पूर्ण सुरक्षा।

देश की एक बड़ी आबादी द्वारा समझी और बोली जाने वाली हिंदी राष्ट्रीय स्तर पर संवाद और प्रशासन को सुगम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हिंदी का प्रचार-प्रसार राष्ट्रीय एकता और प्रशासनिक दक्षता को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से किया गया है। किंतु यह प्रचार सदैव सह-अस्तित्व की भावना पर आधारित होना चाहिए, न कि प्रतिस्थापन या थोपे जाने की नीति पर। संवैधानिक दृष्टि से हिंदी का विकास स्वाभाविक और प्रेरणादायक होना चाहिए, न कि अन्य भाषाओं की कीमत पर।

हिंदी के प्रचार से क्षेत्रीय भाषाओं के प्रभावित होने की आशंका प्रायः तब उत्पन्न होती है, जब भाषाई विविधता को प्रतिस्पर्धा के रूप में देखा जाता है। वास्तव में, भाषाएँ परस्पर सम्मान और प्रोत्साहन के वातावरण में ही सबसे अधिक फलती-फूलती हैं। हिंदी का विकास क्षेत्रीय भाषाओं के कमजोर होने पर निर्भर नहीं है; बल्कि एक बहुभाषी समाज, जहाँ सभी भाषाओं को समान सम्मान प्राप्त हो, सांस्कृतिक आत्मविश्वास और राष्ट्रीय एकता को और अधिक मजबूत करता है। जब नागरिक अपनी भाषाई पहचान को लेकर लेकर आश्वस्त होते हैं, तो वे हिंदी सहित अन्य भाषाएँ सीखने और अपनाने के लिए अधिक तत्पर हो जाते हैं ।

समकालीन भारत में नीतियों और पहलों का उद्देश्य क्षेत्रीय भाषाओं को शिक्षा, प्रशासन, मीडिया, प्रौद्योगिकी और साहित्य के माध्यम से और अधिक सशक्त बनाना होना चाहिए। डिजिटल मंच, अनुवाद तकनीकें और बहुभाषी शासन सभी भारतीय भाषाओं के समानांतर विकास के लिए अभूतपूर्व अवसर प्रदान करते हैं। विभिन्न भाषाओं के बीच अनुवाद और साहित्यिक आदान-प्रदान भारत की सामूहिक सांस्कृतिक विरासत को और समृद्ध कर सकते हैं।

क्षेत्रीय भाषाएँ भारत की सांस्कृतिक विविधता की आत्मा हैं, जबकि हिंदी इस विविधता को जोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी है। भारतीय संविधान भाषाई वर्चस्व नहीं, बल्कि भाषाई समरसता की कल्पना करता है–जहाँ प्रत्येक भाषा, चाहे वह बड़ी हो या छोटी, सम्मान और अवसर के साथ विकसित हो सके। भारत की वास्तविक शक्ति एकरूपता में नहीं, बल्कि विविधता में एकता में निहित है, जहाँ एक भाषा का संवर्धन अन्य भाषाओं के उत्कर्ष के लिए पूरक बनता है, न कि उसका प्रतिस्पर्धी।

सिन्धु नायर
सहायक निदेशक (रा भा)

लेखापरीक्षा में हितधारकों की सहभागिता का महत्व

लेखापरीक्षा प्रक्रिया की प्रभावशीलता, पारदर्शिता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने में हितधारकों की सहभागिता का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। लेखापरीक्षा केवल अभिलेखों की जाँच तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शासन व्यवस्था, अनुपालन और कार्य निष्पादन में सुधार लाने का एक सकारात्मक माध्यम है। हितधारकों की सक्रिय भागीदारी से लेखापरीक्षा के निष्कर्ष अधिक सार्थक और उपयोगी बनते हैं।

लेखापरीक्षा से जुड़े प्रमुख हितधारकों में लेखापरीक्षित कार्यालय, प्रबंधन, क्षेत्रीय अधिकारी, लेखापरीक्षा टीमें, निगरानी संस्थाएँ, नीति-निर्माता तथा अंततः आम नागरिक शामिल हैं। प्रत्येक हितधारक अपनी भूमिका, अनुभव और जानकारी के माध्यम से लेखापरीक्षा प्रक्रिया को समृद्ध बनाता है।

प्रभावी सहभागिता से लेखापरीक्षा के उद्देश्यों, दायरे और अपेक्षाओं की स्पष्ट समझ विकसित होती है। जब लेखापरीक्षित इकाइयों को प्रक्रिया की समुचित जानकारी होती है, तो अभिलेखों की उपलब्धता में देरी, भ्रम और अनावश्यक असहयोग की स्थिति से बचा जा सकता है। संवाद के माध्यम से लेखापरीक्षा को व्यावहारिक कठिनाइयों और प्रणालीगत सीमाओं की बेहतर समझ मिलती है, जिससे संतुलित और यथार्थपरक टिप्पणियाँ संभव होती हैं।

हितधारकों की सहभागिता से लेखापरीक्षा साक्ष्यों की गुणवत्ता भी बेहतर होती है। समय पर जानकारी, स्पष्टीकरण और अभिलेख उपलब्ध होने से निष्कर्ष अधिक सटीक होते हैं। इससे प्रक्रियागत त्रुटियों और प्रणालीगत कमजोरियों के बीच

भावना

स्पष्ट अंतर किया जा सकता है।

शासन के दृष्टिकोण से, हितधारकों की सहभागिता पारदर्शिता और विश्वास को बढ़ावा देती है। सहभागी और संवादात्मक लेखापरीक्षा प्रक्रिया से लेखापरीक्षा को दंडात्मक नहीं, बल्कि सुधारात्मक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। इससे उत्तरदायित्व और निरंतर सुधार की संस्कृति विकसित होती है।

इसके अतिरिक्त, लेखापरीक्षा टिप्पणियों और सिफारिशों के प्रभावी क्रियान्वयन में भी सहभागिता सहायक होती है। जब हितधारकों को निष्कर्षों पर चर्चा में शामिल किया जाता है, तो व्यावहारिक और क्रियान्वयन योग्य सिफारिशें तैयार होती हैं। इससे सुधारात्मक कार्यों के प्रति स्वामित्व की भावना बढ़ती है।

वर्तमान जटिल और तकनीक-आधारित प्रशासनिक परिवेश में हितधारक सहभागिता का महत्व और भी बढ़ गया है। यह लेखापरीक्षा प्राथमिकताओं को उभरते जोखिमों और संगठनात्मक लक्ष्यों के अनुरूप ढालने में सहायक होती है।

अतः, हितधारकों की सहभागिता लेखापरीक्षा प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। यह लेखापरीक्षा की गुणवत्ता बढ़ाती है, निष्पक्षता सुनिश्चित करती है और सुशासन के व्यापक उद्देश्यों को सुदृढ़ बनाती है।

के शशिधर

उप निदेशक (सीएस/जीएसटी) II

डेटा के युग में लेखापरीक्षा को सशक्त बनाना: 'डेटा साइंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और साइबर सुरक्षा' पर पाठ्यक्रम के माध्यम से आईआईटी मद्रास के साथ साथ सीएजी की रणनीतिक पहल

आज की डिजिटल दुनिया में, डेटा अब सिर्फ जानकारी नहीं है - यह शक्ति है। प्रत्येक क्लिक, चित्र, लेनदेन और निर्णय डेटा उत्पन्न करता है, और इस डेटा से अर्थ निकालने की क्षमता आधुनिक शासन और व्यावसायिक सफलता का निर्धारक बन चुकी है। इस बुनियादी परिवर्तन को स्वीकार करते हुए, भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक (सीएजी) ने अपने अधिकारियों को आईआईटी मद्रास के साथ एक संरचित शैक्षणिक सहयोग के माध्यम से डेटा विज्ञान, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और साइबर सुरक्षा में दक्षताओं का निर्माण करने में सक्षम बनाकर एक दूरंदेशी और रणनीतिक कदम उठाया है।

डेटा और बुद्धि द्वारा परिभाषित युग में, सही सीखने का मार्ग चुनना महत्वपूर्ण है। आईआईटी मद्रास का पायथन, डेटा साइंस, मशीन लर्निंग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर आधारित दृष्टिकोण केवल शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक परिवर्तनकारी अनुभव प्रदान करता है। यह शिक्षार्थियों को डेटा के माध्यम से दुनिया को समझने और बुद्धिमान प्रणालियों के माध्यम से भविष्य को आकार देने के लिए मानसिकता, कौशल और विश्वास से लैस करता है। नवाचार की अगली लहर का हिस्सा बनने की इच्छा रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए, यह केवल एक पाठ्यक्रम नहीं है - यह भविष्य की सुदृढ़ आधारशिला है ।

INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY MADRAS

- डेटा-संचालित लेखापरीक्षा अनिवार्यताएं

सार्वजनिक लेखापरीक्षा आज चार "V' -- Volume (मात्रा) Velocity (वेग), Variety (विविधता) और Veracity of Data (डेटा की सत्यता) से परिभाषित डेटा वातावरण में संचालित होती है। वित्तीय प्रबंधन प्रणाली, कल्याणकारी

योजनाएं, कर मंच, खरीद पोर्टल और डिजिटल सेवा वितरण तंत्र बड़े पैमाने पर डेटासेट उत्पन्न करते हैं, जो प्रायः असंरचित और लगातार परिवर्तित होते रहते हैं। ऐसे जटिल डेटा परिदृश्य से अर्थपूर्ण लेखा-परीक्षा निष्कर्ष निकालने के लिए केवल विषयगत ज्ञान पर्याप्त नहीं है; इसके लिए उन्नत विश्लेषणात्मक क्षमताओं की आवश्यकता होती है। इसी संदर्भ में, *"डेटा साइंस, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और साइबर सुरक्षा"* पर आईआईटी मद्रास के साथ सीएजी का सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। यह कार्यक्रम समकालीन लेखा-परीक्षा चुनौतियों का समाधान करते हुए अधिकारियों को साक्ष्य-आधारित और प्रौद्योगिकी-सक्षम लेखा-परीक्षा के लिए आवश्यक उपकरण और तकनीक प्रदान करता है।

• प्रारंभिक चरण : सीखने की यात्रा की शुरुआत

आईआईटी मद्रास पाठ्यक्रम पायथन प्रोग्रामिंग में मूलभूत क्षमताओं को मजबूत करने से शुरू होता है, जो आधुनिक डेटा एनालिटिक्स को नया आधार प्रदान करती है । इस यात्रा के केंद्र में पायथन है, जो डेटा विज्ञान और एआई में सबसे व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली प्रोग्रामिंग भाषा है। आईआईटी मद्रास पायथन पर एक सामान्य प्रोग्रामिंग टूल के रूप में नहीं, बल्कि एक डेटा-केंद्रित भाषा के रूप में विशेष जोर देता है। शिक्षार्थी की यह यात्रा इस बात को समझने से शुरू हाती है कि कंप्यूटर कैसे सोचते हैं और सटीक निर्देश सार्थक परिणामों में कैसे परिवर्तित होते हैं। डेटा साइंस के दृष्टिकोण से पायथन सीखते हुए, अधिकारी डेटा की सफाई (जो प्रायः कुल विश्लेषण कार्य का लगभग 80 प्रतिशत होती है), डेटा हेरफेर, दृश्यांकन और सार-संक्षेपण जैसे आवश्यक कौशल विकसित करते हैं, जो सीधे लेखा-परीक्षा उद्देश्यों से जुड़े होते हैं। गूगल कोलैब जैसे प्लेटफार्मों के माध्यम से सक्षम हैंड्स-ऑन दृष्टिकोण, यह सुनिश्चित करता है कि सीखना व्यावहारिक, इंटरैक्टिव और तुरंत लागू करने योग्य हो। गूगल कोलैब का उपयोग करके हैंड्स-ऑन कोडिंग के माध्यम से, शिक्षार्थी जटिल सॉफ्टवेयर के बारे में चिंता किए बिना, पहले दिन से वास्तविक पायथन प्रोग्राम को लिखते और निष्पादित करते हैं। यह दृष्टिकोण तकनीकी बाधाओं को दूर करता है और शिक्षार्थियों को तर्क, डेटा हैंडलिंग, दृश्यांकन और समस्या-समाधान पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता देता है। गलतियों को असफलताओं के रूप में नहीं बल्कि सीढ़ी वाले पत्थरों के रूप में माना जाता है, जो आत्मविश्वास और जिज्ञासा को मजबूत करता है।

1. पायथन की व्यापक लाइब्रेरी पारिस्थितिकी तंत्र - जैसे कि नमपाई (Numpy) पांडास (Pandas) , मैटप्लोटलिब (Matplotlib) और साइकिट-लर्न (Scikit-learn) - शिक्षार्थियों को डेटा को साफ करने, पैटर्न का विश्लेषण करने और

अंतर्दृष्टि को दृश्य रूप में प्रस्तुत करने में सक्षम बनाती है, जो किसी भी डेटा-संचालित लेखापरीक्षा के लिए अनिवार्य है ।

2. मशीन लर्निंग, जो इस कार्यक्रम का एक प्रमुख स्तंभ है, नियम-आधारित प्रोग्रामिंग से हटकर अनुभव से सीखने वाली प्रणालियों की ओर एक परिवर्तन को दर्शाती है। आईआईटी मद्रास मशीन लर्निंग अवधारणाओं को स्पष्ट रूप से समझाता है, जहां सांख्यिकी, गणित और कंप्यूटर विज्ञान को वास्तविक अनुप्रयोगों से जोडा जाता है। शिक्षार्थी वर्गीकरण, प्रतिगमन, क्लस्टरिंग और रिइनफोर्समेंट लर्निंग जैसी तकनीकों का अध्ययन करते हैं और यह समझते हैं कि मशीनें कैसे पूर्वानुमान लगाती हैं, विसंगतियों का पता लगाती हैं, धोखाधड़ी पहचानती हैं और जटिल पैटर्न को पहचानती हैं।

महत्वपूर्ण रूप से, कार्यक्रम इस बात पर जोर देता है कि विभिन्न एल्गोरिदम क्यों मौजूद हैं और किसी समस्या के लिए सही को कैसे चुनना है - यही समझ एक दक्ष पेशेवर को साधारण उपयोगकर्ता से अलग करती है।

3. आईआईटी मद्रास में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को ऐतिहासिक गहराई और आधुनिक प्रासंगिकता दोनों के साथ सिखाया जाता है। प्रारंभिक न्यूरल मॉडलों से लेकर डीप लर्निंग की संरचनाओं तक, शिक्षार्थी समझते हैं कि मशीनें कृत्रिम न्यूरल नेटवर्क के माध्यम से मानव बुद्धि का अनुकरण कैसे करती हैं

4. बहु-स्तरीय न्यूरल नेटवर्क द्वारा संचालित डीप लर्निंग ने कंप्यूटर विजन, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण, चिकित्सा इमेजिंग, स्वायत्त प्रणालियों और धोखाधड़ी का पता लगाने जैसे क्षेत्रों को बदल दिया है। इन अवधारणाओं का अध्ययन करके, शिक्षार्थी चेहरे की पहचान, चैटबॉट, मशीन अनुवाद और स्मार्ट हेल्थकेयर सिस्टम के पीछे की तकनीकों के संपर्क में आते हैं।

पायथन मूल सिद्धांतों से उन्नत एआई अवधारणाओं तक सीखने का अवसर प्रदान करके, कार्यक्रम यह सुनिश्चित करता है कि शिक्षार्थी अभिभूत नहीं हैं, बल्कि सशक्त हैं।

इसके अलावा, इसके सबसे बड़े आकर्षणों में से एक आईआईटी मद्रास की पांच दिवसीय आवासीय अध्ययन भ्रमण थी, जहां 160 से अधिक अधिकारियों ने एक अद्वितीय और और प्रेरणादायक शिक्षण वातावरण का अनुभव किया। विशाल हरित परिसर, जहाँ कक्षाओं के साथ-साथ स्वतंत्र रूप से विचरण करते हिरण, नीलगाय और बंदर दिखाई देते हैं, इस बात का सजीव उदाहरण प्रस्तुत करता है कि प्रौद्योगिकी और प्रकृति किस प्रकार सामंजस्य के साथ सह-अस्तित्व में रह सकती हैं।

भावना

कार्यक्रम का समापन थैयूर में 'डिस्कवरी' उपग्रह परिसर की यात्रा के साथ हुआ, जिसमें एशिया की सबसे बड़ी **शैलो वेव बेसिन** अनुसंधान सुविधा है। यह अत्याधुनिक, बहु-दिशात्मक तरंग बेसिन बंदरगाहों, तटीय संरचनाओं, अंतर्देशीय जलमार्गों और अपतटीय प्रणालियों से जुड़ी जटिल वास्तविक समस्याओं के समाधान हेतु तरंगों और धाराओं की जटिल अंतःक्रियाओं का अनुकरण करता है, और यह दर्शाता है कि उन्नत विज्ञान किस प्रकार राष्ट्रीय चुनौतियों का समाधान करता है।

समग्र रूप से, यह पाठ्यक्रम केवल पेशेवर कौशल-वृद्धि तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने प्रतिभागियों को प्रेरित किया, उनके दृष्टिकोण को व्यापक बनाया और तीव्र गति से बदलते डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र में सतत अधिगम के महत्व को रेखांकित किया। शैक्षणिक कठोरता, व्यावहारिक प्रासंगिकता और अनुभवात्मक अधिगम के समन्वय के माध्यम से, इस पहल ने क्षमता निर्माण को **सार्थक और स्मरणीय** बनाया है तथा डेटा के युग में प्रभावी, भविष्य-उन्मुख लेखा-परीक्षा के लिए सीएजी की तैयारियों को सुदृढ़ किया है।

विनीता कुमारी साह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

नए खबाव, नई मंजील (U.P. से केरला तक का सफर)

बिजनौर की गलियों में बडा हुआ मैं, एक साधारण सा लडका, जब पहली बार अपनी पहली नौकरी के लिए केरला पहुंचा तो दिल उम्मीद से कम और डर से ज्यादा भरा भरा हुआ था। मैं कभी घर से बाहर नहीं निकला था, और पहली ही बार में इतनी दूर.....

जब मैं केरला पहुंचा तो मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था, पर मेरे ऑफिस के साथियों ने मेरा हौसला बढाया उन्होंने वहां पहुंचकर मेरी हर मुमकिन मदद की और मैं D.V. (डोक्यूमेंट वेरीफिकेशन) के लिए तैयार हो सका। लेकिन असली मुश्किल तब शुरू हुई जब मुझे जोर की भूख लगी वहां का खाना मेरे लिए बिल्कुल अन्जान था । जब मैंने कैंटीन में पहली बार Boiled Rice और नारियल के तेल में बनी सब्जी देखी तो U.P. के मसालेदार खाने की बहुत याद आई।

भाषा की बाधा इतनी बडी थी कि छोटी-छोटी जरूरतों के लिए भी मुझे इशारा करना पडता था । ऐसा लगता था कि जैसे मैं किसी दूसरी दुनिया में आ गया हूं जहां मेरी आवाज किसी को समझ नहीं आ रही। कुछ दिन गुजरने के बाद मैं इतना परेशान हो गया कि मैंने मन बना लिया था कि मैं यहां नहीं रह पाऊंगा। ऐसे मुश्किल वक्त में मेरी दोस्त मनीषा मेरे लिए एक मजबूत सहारा बनी । वो मुझे समझाती थी कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए घर से निकलना ही पडता है । उसने मुझे टूटने नहीं दिया। मैं उसका तहै-दिल से शुक्रिया अदा करता हूं।

धीरे-धीरे वक्त बदला और मैंने खुद को यहां के रंग में रंगना शुरू किया । जैसे-जैसे समय बीता केरला की खूबसूरती ने मेरे डर को खत्म करना शुरू कर दिया । मैंने देखा कि भले ही यहां के लोग मेरी भाषा नहीं समझते लेकिन वो मेरी मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं । उनकी मुस्कुराहट ने मुझे एहसास दिलाया कि इंसानियत की कोई भाषा नहीं होती। धीरे-धीरे मैंने मलयालम भाषा के कुछ बेसिक शब्द सीखने शुरू किए । अब मैं लोगों को देखकर "नमस्कारम" कहता तो, उनके चेहरे खिल उठते । जब कोई मुझसे पूछता की, 'और सब कैसा चल रहा है' तो मैं गर्व से कहता–एल्लाम ओ के (सब बढिया है। कोई दिक्कत नहीं है) इन छोटे-छोटे शब्दों ने मेरे और वहां के लोगों के बीच की दूरी मिटा दी।

एक शाम, जब मैं पहली बार समुन्दर के किनारे खडा हुआ तो वो पल मेरी जिंदगी का सबसे यादगार पल बन गया । यू पी में रहकर मैंने सिर्फ नदियां देखी थी । लेकिन समुन्दर की वो विशाल लहरें और दूर तक फैला हुआ नीला पानी देखकर मैं दंग रहा गया। मैंने महसूस किया कि मेरी तकलीफें उन लहरों के सामने बहुत छोटी हैं । जब भी मैं अकेला महसूस करता या डर लगता, तो मैं समुन्दर के किनारे बैठ जाता था । लहरों की आवाज मेरे दु:खों को अपने साथ बहा ले जाती थी।

आज मैं केरला के सबसे खूबसूरत शहर कोच्ची में रहता हूं। कोच्ची का माहौल इतना प्यारा है कि अब ये मुझे अपना घर लगने लगा है। मुझे आज भी याद है जब मैं पहली बार वहां एक जहाज में बैठा था - वो ठंडी हवा और पानी की लहरें, वो एक ऐसा अनुभव था जो मैं कभी नहीं भूल सकता।

केरला में रहकर मैंने एक बात महसूस की है। यहां के लोग बहुत ईमानदार और शांत प्रवृत्ति के होते हैं। यहां कोई धर्म या जाति के नाम पर भेदभाव नहीं करता। सब एक-दूसरे के त्यौहार मनाते हैं और एक-दूसरे के धर्म की इज्जत करते हैं। अगर किसी के साथ कुछ गलत

हो जाए, तो पूरा केरला एक साथ खडा हो जाता है। शिक्षा, विकास और संस्कृति में केरला देश के बाकी हिस्सों के लिए एक मिसाल है।

आज भले ही मैं यहां नया हूं, पर मुझे गर्व है कि मैंने अपने Comfort zone से बाहर निकलकर एक नई दुनिया को अपनाया है । मेरी पहली नौकरी ने मुझे पैसा ही नहीं, बल्कि जीने का एक नया नजरिया और केरला जैसा एक खूबसूरत घर भी दिया है।

शाहनवाज़
आशुलिपिक

एक नई भाषा सीखें और एक नई आत्मा पाएं ।
चेक कहावत

खाली जेब ने सिखाया जीवन का सबक

“जेब खाली हो तो भी सपना बड़ा रखो,
क्योंकि दौलत साथ नहीं देती, हिम्मत हमेशा देती है।”

जीवन की सबसे अनमोल सीखें अक्सर मुश्किल रास्तों से होकर गुजरती हैं। इनमें से एक सीख हमें खाली जेब भी देती है। खाली जेब सिर्फ पैसों की कमी नहीं बताती, बल्कि यह इंसान को खुद से मिलवाती है–उसकी क्षमता, उसकी इच्छाशक्ति और उसे सच में क्या बनने की जरूरत है, यह सिखाती है ।

खाली जेब हमें सबसे पहले यह सिखाती है कि सुविधाएँ अस्थायी हैं, पर संकल्प स्थायी। जब जेब में पैसे नहीं होते, तब मनुष्य के भीतर छुपा साहस जागता है। वह सोचने लगता है कि अब क्या किया जाए, कैसे हालात बदलें। इसी सोच में छुपा होता है संघर्ष का पहला कदम और सफलता की पहली बीज।

दूसरी बात, खाली जेब हमें सिखाती है कि आडंबर से दूर रहकर सादगी अपनाना भी एक कला है। जिस दिन जेब खाली होती है, उस दिन हम समझ पाते हैं कि असल में हमें कितनी कम चीज़ों की जरूरत है। हम महंगी वस्तुओं से नहीं, बल्कि अच्छे विचारों से अमीर हो सकते हैं।

तीसरी महत्वपूर्ण सीख यह है कि खाली जेब रिश्तों की पहचान कराती है। जब सब कुछ ठीक होता है, तब दुनिया साथ चलती है, लेकिन जब हालात चुनौतीपूर्ण होते हैं, तब वही लोग दिखते हैं जो सच में अपना कहते हैं। खाली जेब हमें सिखाती है कि कौन हमारे साथ मन से जुड़ा है और कौन सिर्फ समय से।

इसके अलावा, खाली जेब हमें मेहनत की कीमत भी समझाती है। जब हम अपने हाथों कमाए हुए पैसे खर्च करते हैं, तो हर रुपये का मूल्य समझ आता है। हम सीखते हैं कि सफलता कड़ी मेहनत से मिलती है, कोई शॉर्टकट नहीं।

अंततः, खाली जेब एक शिक्षक की तरह है–कठोर, पर आवश्यक। यह हमें झुकना नहीं, बल्कि दृढ़ता से उठकर फिर से चलना सिखाती है। यह याद दिलाती है कि **“सफलता पैसों से नहीं, इरादों से खरीदी जाती है।”**

“खाली जेब ने सिखाया कि हर हार स्थायी नहीं होती,

अगर इरादे मजबूत हों तो खाली जेब भी एक दिन कहानी बन जाती है।”

राकेश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सूकून का आशियाना

मैं एक दिन बैग लेकर आई थी, जड़ें नहीं,
सिर्फ काम करने—बस एक नौकरी थी।
यह घर के पास एक दफ़्तर भर था,
कभी सोचा भी नहीं, यह घर बन जाएगा।

पर दिनों ने जड़ें जमाईं, और मैंने भी,
साझा अभिवादनों और कोमल मुस्कानों में।
उन सड़कों में जो सहज पहचानी गईं,
उन जिन्दगियों में जो धीरे-धीरे मेरी हो गईं।

यह ठौर बन गया मेरा दृढ़ आधार,
जहाँ विश्वास पनपा, स्नेह मिला।
मैं हँसी, सीखी, प्रेम किया, बढ़ी–
और यहीं कहीं मेरे दिल को सुकून मिला।

तुम पहले नहीं थे, पर सच्चे थे,
हर अर्थ में सूकून का आशियाना।
वह घर जिसे बिना सोचे चुन लिया जाता है,
जो चुपचाप ठहरना सिखा देता है।

मैंने अपने दिन गढ़े, अपना क़बीला पाया,
अपनी लय, अपनी गति खोजी।
और रोज़मर्रा की ज़िंदगी में कहीं,
मैंने केवल चेहरा नहीं, दिल दे दिया।

किसी तरह दस्तूर लय बन गई,
समय-सीमाएँ टीमवर्क में ढल गईं।
हमराही परिवार बन गए,
दायित्व आशीर्वाद बन गए।

अब बुलावा आ गया है, स्थानांतरण तय है,
हर अंग में इसके प्रतिरोध का आभास है ।
अगर तैनाती में प्रेम की चलती,
तो यही वह जगह होती, जिसे मैं चुनती।

उन यादों के लिए धन्यवाद जिन्हें मैं सहेजूँगी,
उन हाथों के लिए जिन्होंने थामा,
उन दिलों के लिए जिन्होंने समझा।
हर अंगीकार के लिए, जिसमें मुझे पहचाना गया ।
कुछ घर दूसरे जरूर होते हैं, पर कभी कमतर नहीं ।

अंजू ऐब्रहाम
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरा केरल का अनुभव

मेरा नाम निशांत गौरव है और मैं बिहार से हूं । वर्तमान में मै महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, चेन्नई, शाखा कार्यालय कोच्ची में लेखापरीक्षक के रूप में कार्यरत हूं। जब पहली बार केरल में पोस्टिंग मिली तो मन में थोड़ा संदेह था कि क्या मैं यहां के माहौल और भाषा में खुद को ढाल पाऊंगा। लेकिन यहां आने के बाद सब कुछ उम्मीद से कहीं अधिक सहज और सुखद रहा ।

केरल अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है । मुन्नार की हरी भरी पहाडियां, आलेप्पी के शांत बैकवाटर, वर्कला के बीच तथा तेक्कडी के हरे घने वन मन को अत्यंत शांति प्रदान प्रदान करते हैं । कोच्ची शहर अपनी ऐतिहासिक विरासत और आधुनिक विकास का सुंदर संगम प्रस्तुत करता है । हरियाली, स्वच्छ हवा और शांत वतावरण केरल को सचमुच 'ईश्वर का अपना देश-God's own country' बनाता है ।

केरल की संस्कृति और परंपरा भी बेहद आकर्षक है । हमारे कार्यालय में मुझे यहां के प्रसिद्ध त्योहार ओणम मनाने का मौका मिला । कथकली और मोहिनआट्टम जैसी नृत्य शैलियां केरल की सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाती है ।

कार्य और दैनिक जीवन के अनुभव भी मेरे लिए बेहद सकारात्मक रहे हैं । कार्यालय वातावाण पेशेवर और सहयोग पूर्ण है । यहां के लोगों की सादगी ने मुझे गहराई से प्रभावित किया। धीरे-धीरे मैंने मलयालम पढ़ना और लिखना भी सीख लिया है, जिससे यहां की संस्कृति से मेरा जुड़ाव और गहरा हो गया।

भावना

भोजन की बात करें तो केरल का स्वाद भी उतना ही समृद्ध है । नारियल आधारित व्यंजन, इडली-डोसा, आपम और स्ट्यू, पुट्टू और कडला, मलबार परोटा, केरला सद्या और फिष करी जैसे पकवान धीरे-धीरे मेरे दैनिक जीवल का हिस्सा बन गए हैं । हर व्यंजन में मसालों और नारियल का संतुलित स्वाद यहां की परंपरा को दर्शाता है ।

केरल में बिताए गए दो वर्ष मेरे जीवन के अत्यंत महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी वर्ष रहे हैं । इस भूमि ने मुझे न केवल एक कार्यस्थल ही नहीं दिया बल्कि, सोचने का एक नया दृष्टिकोण, जीवन को सरसता से जीने की कला और विविध संस्कृतियों को सम्मान देना भी सिखाया है । बिहार से आकर केरल में रहते हुए मैने यह समझा कि भाषा और खान-पान भले ही अलग हों, लेकिन मानवीय संवेदनाएं और अपनापन हर जगह एक से होता है । केरल की शांति, अनुशासन और प्राकृतिक सुंदरता ने मेरे व्यक्तित्व को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है । यह अनुभव मेरे जीवन की अमूल्य धरोहर है, जिसे मैं हमेशा अपने दिल में सहेजकर रखूँगा ।

निशांत गौरव़
लेखापरीक्षक

कोडईकनाल – पहोडों की राजकुमारी

अक्टूबर का महीना, त्योहार का समय । एक सप्ताहांत में हमने निर्णय लिया कि इस बार प्रकृति की गोद में कुछ समय बिताय जाए। मैंने इस बारे में अपने मित्र एवं सहकर्मी निशान्त को भी बताया और हमारी मंजिल तय हुई –कोडई कनाल। यह तमलिनाडु के डिंडिगुल जिले में स्थित एक हिल स्टेशन है। इस स्थान का नाम दो तमिल शब्दों को मिलाकर बनाया गया है - 'कोडई' यानी उपहार एवं 'कनाल' यानी वन - तो इस स्थान के नाम का अर्थ है 'वन का उपहार'। यह समुद्र तल से करीब 2225 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है तथा पश्चिम घाट के पलनी हिल्स में है। प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर यह स्थान अंग्रेज़ों द्वारा 1845 में अपने आप को तामिल नाडु के समतल प्रदेश की गर्मी एवं उष्णकटिबंधीय बीमारियों से बचाने के लिए बसाया गया था । यहां का सबसे बडा पर्यटक आकर्षण कृत्रिम रूप से निर्मित कोडाई झील है जिसका निर्माण उस समय के मदुराई कलेक्टर वेरे लेविग्न के सुझाव पर किया गया था ।

हमारी यात्रा की शुरुआत कोच्ची से हुई । सुबह ट्रेन द्वारा हम पलनी पहुचें । पलनी तमिलों का एक मशहूर तीर्थ शहर है, जहां पलनी मला (पहाड) पर सुब्रमण्यन या मुरुगन का प्रसिद्ध मंदिर है । भगवान मुरुगन (कार्तिकेय/सुब्रमण्यम) शिव-पार्वती के पुत्र और तमिलों के प्रमुख रक्षक देवता हैं, जो युद्ध, ज्ञान और प्रेम के प्रतीक हैं। पौराणिक कथा के अनुसार, वे छह अग्निपुंजों से उत्पन्न होकर कृतिकाओं द्वारा पाले गए, और उन्होंने अपनी शक्ति 'वेल' (भाला) से दैत्य सूरपद्म का वध कर देवताओं को मुक्त किया था ।

पलनी पहुँचने के बाद हम दोनों ने एक बस द्वारा कोडई कनाल की ओर प्रस्थान किया । रास्ता घुमावदार था, और दोनों ओर के घने जंगल और धुंध से ढ़की पहाडियां एक खूबसूरत दृश्य प्रस्तुत कर रही थी । हम दोनों ने वहाँ पहुँचकर एक कमरा लिया। शाम में कोडाई झील गए जो बोटिंग, साइकिलिंग और घुड़सवारी के लिए प्रसिद्ध है । झील के किनारे टहलते हुए हमने ठंडी हावा और साइकलिंग का आनंद लिया। हल्की-हल्की बारिश होने के कारण हम दोनों भीग चुके थे। अगले दिन हमने कॉकर्स वाक, ब्रायंट पार्क और पिलर रोक्स जैसे प्रसिद्ध स्थलों का भ्रमण किया। कोकर्स वाक एक पैदल मार्ग है, जो कोड़ाईकनाल झील से लगभग 1 किमी की दूरी पर स्थित है। यह एक व्यू प्वाईंट है जहां से सुंदर वादियों का नजारा और सूर्यास्त देखा जा सकता है। बा्रइंट पार्क कोर्डकनाल झील के पास स्थित बोटानिकल गार्डन है जिसमें विभन्न प्रकार से फूलों और पौधों की प्रजायितयां मौजूद है । पिलर रोक लगभग 400 फीट ऊंची खड़ी चट्टानें हैं, जो कोडाईकनाल के सबसे प्रमुख आकर्षणों में से एक हैं। यहाँ से गहरी घाटी का शानदार दृश्य दिखाई देता है। कोडई कनाल में कई अन्य आकर्षण भी है जैसे सिल्वर फाल्स, कुरिंजी आंटवर मंदिर, बेरिजाम लेक, गुणा केव आदि।

संध्या होते ही हमने कोच्ची की ट्रेन पकडी और अगली सुबह सात बजे वापिस कोच्ची आ गए । इस यात्रा के दौरान हर मोड पर प्रकृती को करीब से देखने का सुखद अनुभव हमें प्राप्त हुआ, जो इस यात्रा को यादगार बनाता है।

ताराकांत पांडा
लेखापरीक्षक

क्रोध प्रबंधनः क्रोध को समझना और सही ढंग से संभालना

क्रोध एक स्वाभाविक मानवीय भावना है। जब हम स्वयं को आहत, अपमानित, असुरक्षित या अन्याय का शिकार महसूस करते हैं, तब क्रोध उत्पन्न होता है। जैसे खुशी और दुःख, वैसे ही क्रोध भी न तो अच्छा है और न ही बुरा। महत्वपूर्ण यह है कि हम क्रोध को कैसे व्यक्त और नियंत्रित करते हैं। अनियंत्रित क्रोध हमारे स्वास्थ्य, संबंधों और निर्णय क्षमता को नुकसान पहुँचा सकता है, जबकि नियंत्रित क्रोध हमें अपनी बात सही ढंग से रखने में मदद करता है।

क्रोध के शारीरिक, मानसिक और व्यवहारिक लक्षण होते हैं। तेज़ धड़कन, मांसपेशियों में तनाव, ऊँची आवाज़, चिड़चिड़ापन या कठोर शब्द इसके सामान्य संकेत हैं। कई लोग क्रोध को दबा लेते हैं, जबकि कुछ लोग उसे अचानक और तीव्र रूप से प्रकट कर देते हैं। दोनों ही स्थितियाँ हानिकारक हो सकती हैं। दबा हुआ क्रोध तनाव, चिंता और स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है, जबकि अनियंत्रित क्रोध रिश्तों में दूरी पैदा करता है।

क्रोध प्रबंधन का पहला कदम है स्वयं की पहचान और जागरूकता। अपने क्रोध के कारणों और शुरुआती संकेतों को पहचानना बहुत आवश्यक है। कार्य का दबाव, आलोचना, अपेक्षाएँ, या विलंब जैसे कारण अक्सर क्रोध को जन्म देते हैं। ऐसे समय में स्वयं से यह प्रश्न पूछना उपयोगी होता है– "मैं ऐसा क्यों महसूस कर रहा हूँ?" या "क्या मेरी प्रतिक्रिया आवश्यक है?"

रुकना और गहरी साँस लेना क्रोध को नियंत्रित करने का सबसे सरल और प्रभावी उपाय है। धीमी और गहरी साँसें हमारे मन को शांत करती हैं। कुछ क्षण का विराम लेना, स्थान बदलना या दस तक गिनना हमें आवेग में गलत प्रतिक्रिया देने से रोक सकता है।

सकारात्मक और संयमित संवाद क्रोध प्रबंधन में अत्यंत महत्वपूर्ण है। दोषारोपण करने के बजाय अपने भावों को शांति से व्यक्त करना चाहिए। "तुम हमेशा..." जैसे वाक्यों के स्थान पर "मुझे ऐसा महसूस होता ह..." कहना अधिक प्रभावी होता है और सामने वाले को भी समझने का अवसर देता है।

नियमित रूप से तनाव प्रबंधन करना भी क्रोध को कम करता है। व्यायाम, योग, ध्यान, संगीत सुनना या प्रकृति के साथ समय बिताना मानसिक तनाव को दूर करता है। पर्याप्त नींद और संतुलित दिनचर्या भी भावनात्मक संतुलन बनाए रखने में सहायक होती है।

इसके साथ ही सहानुभूति और दृष्टिकोण विकसित करना आवश्यक है। दूसरों की स्थिति को समझने का प्रयास करने से क्रोध की तीव्रता कम होती है। हर बात पर प्रतिक्रिया देना आवश्यक नहीं होता, और हर असहमति व्यक्तिगत नहीं होती।

अंत में, यदि क्रोध बार-बार और अत्यधिक हो रहा हो, इस अवस्था से जूझने के लिए इस क्षेत्र के विशेषज्ञ की सहायता लेना बिल्कुल उचित है। यह कमजोरी नहीं, बल्कि आत्म-रक्षा और आत्म-विकास का संकेत है।

क्रोध एक शक्तिशाली भावना है, परंतु वह हमारे जीवन को नियंत्रित न करे। जागरूकता, संयम और अभ्यास के माध्यम से हम क्रोध को सकारात्मक रूप से प्रबंधित कर सकते हैं और अपने जीवन, संबंधों तथा निर्णयों को अधिक संतुलित और स्वस्थ बना सकते हैं।

के शशिधर
उप निदेशक (सीएस/जीएसटी)

इसे बाद में करूँगा

दिन की शुरुआत व्यायाम से होती है। सुबह में व्यायाम करना केवल फिटनेस के बारे में नहीं है; यह एक मनोवैज्ञानिक जीत है। व्यायाम के बाद, ध्यान घरेलू कामों पर होता है–घर की सफाई, नाश्ता बनाना आदि। चूँकि उस समय घर में शांति होती है, इसलिए ये काम एक चिंतनशील प्रवाह बन जाता है । इसके बाद अखबार पढ़ने से यह सुनिश्चित होता है कि मैं वास्तविकता से अवगत हूँ, न कि केवल सोशल मीडिया फीड स्क्रॉल कर रहा हूँ।

शाम का समय मैं सुनिश्चित करता हूँ कि मैं गति बनाए रखूं । शाम 6:00 बजे थकान के कारण बिस्तर पर गिरने के बजाय, मैं सक्रिय रहता हूँ। मैं बाज़ारों और दुकानों का रुख करता हूँ और रोज़मर्रा के छोटे कामों को एक जीत की खुशी में बदल देता हूँ। जब तक मैं रात के खाने के लिए बैठता हूँ, अधूरे कामों का भारी बोझ गायब हो चुका होता है। मैं केवल दिन काट नहीं रहा हूँ; मैं अंततः उस शांति का आनंद ले रहा हूँ जिसे मैंने कमाया है।

आप सोच रहे होंगे की मैं अपने बारे में बात कर रहा था । लेकिन नहीं । मिलिए मेरे सबसे वफादार, लेकिन बिन बुलाए रूममेट से : जो मेरा ही एक बेहतर रूप है । आप उसे जानते ही होंगे । आप में से कई लोगों का भी बिन बुलाए रूममेट होगा यह । वह आपके दिमाग में रहता है, एक सूपरहीरो की तरह, जो डेडलाइन से पहले पूरे घर की सफाई, महीने भर की रिपोर्ट और नई भाषा सीखने का दम रखता है। अगर ये सब मेरा बिन बुलाया रूममेट कर रहा है तो मै क्या कर रहा हूँ ? मुझे तो अभी सोफा पुकार रहा है, और इंटरनेट पर फालतू वीडियोज़ देखे बिना मुझसे रहा नहीं जाता। तो यह जो मेरा सुपरहीरो रूममेट कर रहा है वह मै कब करूँगा? मै किसका शिकार हूँ? मैं "**इसे बाद में करूँगा**" मानसिकता का शिकार हूँ जिसे टालमटोल (Procrastination) भी कह सकते हैं ।

टालमटोल (Procrastination) का मतलब असल में आलसी होना नहीं है; बल्कि यह भावनाओं को नियंत्रित करने का एक तरीका है। हम काम को इसलिए टालते हैं क्योंकि वे हमें बेचैनी या तनाव महसूस कराते हैं। कुर्सी पर पड़े कपड़ों के ढेर के बारे में सोचें। वह सिर्फ कपड़ों का ढेर नहीं है; वह 20 मिनट का एक ऐसा काम है जिसे आप 5 मिनट के लिए इन्स्टाग्राम के वास्ते टाल देते हैं (जो हाते होते कब एक घंटे में बदल जाए, पता ही नहीं चलता)। या फिर वह 'डरावना' ईमेल जो आपको अपने बॉस को भेजना है। आप खुद से कहते हैं कि इसे लिखने के लिए आपको 'सही मूड' चाहिए, लेकिन असलियत में, आप सिर्फ उस जवाब से होने वाले तनाव से बच रहे होते हैं।

आपके रूममेट सुपरहीरो को भगाकर आप खुद सुपरहीरो बन सकते हो। अच्छी खबर यह है की इसके लिए आपको अपना पूरा व्यक्तित्व बदलने की ज़रूरत नहीं है। आपको बस अपने दिमाग को चकमा देने की ज़रूरत है।

- 5-मिनट का नियमः खुद से कहें कि आप उस काम को सिर्फ पाँच मिनट के लिए करेंगे। अगर उसके बाद आप रुकना चाहें, तो रुक सकते हैं। आमतौर पर, सबसे कठिन काम शुरू करने के लिए ज़रूरी 'सक्रियण ऊर्जा' (activation energy) जुटाना होता है। एक बार लैपटॉप खुल गया, तो संभावना है कि आप काम जारी रखेंगे।
- सबसे मुश्किल काम सबसे पहलेः जिस काम से आपको सबसे ज्यादा डर लगता है, उसे सुबह सबसे पहले निपटा लें। उसके

बाद बाकी सब कुछ बहुत आसान लगने लगेगा।

- खुद को माफ करें: समय बर्बाद करने के लिए खुद को कोसना असल में आपको और भी ज्यादा टालमटोल करने की ओर धकेलता है। अपनी गलती को स्वीकार करें, फोन को दूसरे कमरे में रखें और नए सिरे से शुरुआत करें।

'भविष्य के आप' (Future You) बहुत शानदार है, लेकिन 'वर्तमान के आप' (Current You) ही वह है जो वास्तव में काम पूरा करता है।

अंत में कहूं तो यह लेख खुद मेरे टलमटोल करने का परिणाम है। मैं, हिंदी अधिकारी सिंधु मैडम से वादा करता रहा कि मैं पत्रिका के लिए एक हिंदी लेख 'कल' दूंगा। लेकिन वह 'कल' आखिरकार आने में 1-2 साल लग गए। जो सिंधु मैडम से वादा करता रहा, वो मै नहीं था, वो मेरा सुपरहीरो रूममेट था। मै तो असल में कह रहा था की - "**इसे बाद में करूँगा ।**" ।

रघुराम वारियर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भाषाओं का ज्ञान ही प्रज्ञता का द्वार है।
रोजर बेकन

हिन्दी पखवाड़ा 2025-26 - रिपोर्ट

महा निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय,चेन्नै, शाखा कार्यालय-कोच्ची द्वारा भारत सरकार, गृह मंत्रालय के निदेशों एवं अनुदेशों का पालन करते हुए दिनांक 14.09.2025 से 26.09.2025 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया जिसका आरंभ कार्यालय में इस वर्ष दिनांक 14.09.2025 को गांधीनगर, गुजरात में अखिल भारतीय तौर पर आयोजित हुए उद्घाटन समारोह के उपरान्त किया गया ।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान कार्यालय के कर्मचारियों के लिए प्रतियोगिताएं 18.09.2025 को आरंभ की गईं । कुल 05 प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिनमें 04 एकल प्रतियोगिताएं तथा 01 टीम प्रतियोगिता थी । एकल प्रतियोगिताओं में वर्णानुक्रम, श्रुत लेखन, निबंध लेखन, टिप्पण-आलेखन व अनुवाद एवं प्रश्नोत्तरी (टीम प्रतियोगिता) शामिल थी । कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में बड़े ही उत्साह के साथ और बढ़-चढ़कर भाग लिया । हिन्दी में कार्य करने में हिचकिचाहट हटाने एवं हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए जुलाई से सितंबर 2025 के तिमाही की हिन्दी कार्यशाला पखवाड़े के दौरान 17.09.2025 को आयोजित की गई ।

हिन्दी पखवाड़े का समापन 26 सितंबर 2025 को श्री के शशिधर, उप निदेशक(सीएस/जीएसटी) II की अध्यक्षता तथा मुख्य अतिथि डॉ. अंजली एस, सहायक प्रोफसर, महाराजास कॉलेज, एरणाकुलम एवं श्रीमती उषा श्रीकुमार, उप निदेशक(सीएस/जीएसटी) II एवं सभी अनुभागों के पदधारियों की उपस्थिति में सम्मेलन कक्ष में किया गया ।

इस वर्ष हिंदी पखवाड़े में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण-पत्र एवं नकद पुरस्कार दिए गए । प्रमाणपत्रों का वितरण समापन समारोह के दौरान किया गया । इस आयोजन के दौरान भारत सरकार, गृह मंत्रालय की प्रोत्साहन योजना के अधीन हिन्दी में उत्तम कार्य करने के लिए प्रथम ,द्वितीय पुरस्कार एवं तृतीय पुरस्कार हेतु चयनित विजेताओं को भी प्रमाण-पत्र दिए गए । इस वर्ष की चल वैजयंती के विजेता आईटीआरए अनुभाग को भी पखवाड़े के समापन समारोह में पुरस्कृत किया गया।

हिन्दी पखवाड़ा 2025-26

एक डिब्बा, कई भाषाएँ और एक आवश्यकता

दिनांक 28/10/2025 को छठ पूजा के अंतिम दिन पटना से 04:30 शाम में एक ही रेलगाड़ी के तृतीया श्रेणी में मैं और मेरा भाई अपने-अपने गंतव्य स्थान के लिए रवाना हो गए। 29 तारीख के रात में वाराणसी से दो बूढ़ी अम्माओं ने रेलगाड़ी पकड़ी थी, और वे काशी और आस पास के तीर्थ स्थलों के दर्शन के बाद अपने निवास स्थान विजयवाड़ा जा रहीं थी । उसके दो-तीन स्टेशन बाद ही उत्तर प्रदेश का एक परिवार (माँ, पिता और एक 15 साल का लड़का) का आगमन हुआ जिन्हें पेरुंबाबूर (तमिलनाडु) तक जाना था। हम सभी लोगो का सीट एक ही कम्पार्टमेंट में ही था।

चुंकी मेरे भाई का सफर 29 अक्टूबर के सुबह ही ख़त्म हो गया था, वे अपने स्थान के लिए रवाना हो गए । और अब मुझे अकेले मन नहीं लगने लगा था जिसके वजह से मैं मोबाइल में व्यस्त हो गया। अचानक मुझे अपने कम्पार्टमेंट में एक शोर सुनाई देने लगा। मेरी ध्यान उस तरफ खींचा चला गया । पता चला की एक बूढी अम्मा और उस यूपी के परिवार वालों के बीच कुछ ऊंची आवाज में गहमागहमी चल रही थी, पर क्या बातें हो रही थी कुछ समझ नहीं आ रहा था। कारण था कि वो बूढ़ी अम्मा जो आंध्र प्रदेश से थी जो तेलुगु बोल रही थी और जो यूपी वाला परिवार (जिन्होने शायद कुछ वर्ष तमिलनाडु में व्यतीत किया हो) तमिल में बोल रहा था। करीब 1 घंटे तक चली इस गहमागहमी के पश्चात मुझे पता चला कि दोनों बूढ़ी अम्मा को निचला बर्थ आवंटित था और यूपी वाले परिवार को दो बीच वाला और एक ऊपर वाला बर्थ आवंटित था। परिवार चाह रहा था कि दिन में दोनों बूढ़ी अम्मा एक तरफ निचले बर्थ पर बैठ जाएं और उनका परिवार दूसरे तरफ निचला बर्थ पर बैठ जाए और रात्रि में अपने-अपने बर्थ पर सो जाये। दोनों को आपस में समझने के काफी दिक्कत हो रही थी । अंत में मैंने अपने टूटी फूटी अंग्रेजी से बूढ़ी अम्मा को समझाया पर उसका कोई फायदा नहीं हुआ, क्योंकि अम्मा सीट बदलने को तैयार नहीं हुई। और अंततः मामला शांत हो गया।

ऊपर के एक छोटी सी घटना से एक बात स्पष्ट करती है कि भारत जैसे देश में जहाँ हरेक राज्य कि (मुख्यतः दक्षिण भारत के राज्य और पूर्वोतर भारत) अपनी अलग-अलग भाषा है, एक ऐसी भाषा जरूर होनी चाहिए जो अलग-अलग भाषाओं के बीच पुल का काम कर सके। हिंदी भाषा इसके लिए उत्कृष्ट है और यह हमारी राजभाषा भी है। परंतु इस बात पर कोई दूसरा मत नहीं है कि हमें अपनी भाषा से प्रेम और अन्य प्रान्तों की भाषा का आदर करना चाहिए और अगर हम किसी अन्य प्रांत में नौकरी की वजह से या स्थायी रूप से रहने के लिए जाएं तो बेशक वहां की भाषा भी सीखने की कोशिश करनी चाहिए।

नितीश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मौन संघर्ष

सुबह की पहली साँस, अलार्म से पहले ही टूट जाती है,
रसोई की आँच, और फ़ाइलों की गर्मी–
दोनों एक साथ थामे, मैं दिन की शुरुआत करती हूँ।

कंधों पर टिकी है, पुरखों की चुप्पी,
" अच्छी बेटी ", " समझदार बहू "
और " त्याग " के भारी शब्द।
पर हाथों में है, आज की नौकरी,
टारगेट, मीटिंग, और समय से भागती घड़ी।

मैं कमाती हूँ, पर आज़ाद नहीं हूं,
अखबार पढ़ने या चाय-चाय चिल्लाने के लिए,
कहां है तौलिया, ब्रश, कंघी, घडी-
मै इन सबकी चलती- फिरती इन्वेट्री हूं,
ज़िम्मे मेरे ही है, घर की शांति, घर की इज़्जत ,
घर का सुख –सुकून ।

न नई पीढ़ी जैसी निर्भीक हूँ,
न पुरानी पीढ़ी जैसी सहनशील।
उनकी बेबाक आवाज़ों के बीच
मेरी झिझक कहीं खो जाती है।
वे सवाल उठाती हैं, मैं उत्तर ढूँढ़ती हूँ-
दोनों के बीच, मैं अधूरी-सी लगती हूँ।

कभी कहा जाता है- " ज्यादा बोलती हो",
कभी–"क्यों नहीं बोलती?"
मेरी हर चुप्पी भी, सवाल बन जाती है।

मैं जानती हूँ–
मेरी यह खामोश लड़ाई, नारे नहीं बनती,
न शोर, या सुर्खी -
पर रास्ते ज़रूर बनाती है।
इसी ने दी है हिम्मत नई पीढ़ी को
नौकरी को बेझिझक 'हां', और शादी से बेझिझक 'न' करने की,
अपनी मनचाही जिन्दगी को मुकम्मल करने की ।

सिन्धु नायर
सहायक निदेशक (रा भा)

बढ़ती उम्र – हमारा परंपरिक दृष्टिकोण

हिंदू पौराणिक कथाओं में मनुष्य के जीवन के चार चरण या आश्रम बताए गए हैं: ब्रह्मचर्य (विद्यार्थी/संयमित), गृहस्थ (गृहस्थ/परिवार), वानप्रस्थ (सेवानिवृत्त/वनवासी) और संन्यास (त्यागी/तपस्वी)। प्रत्येक आश्रम के अपने विशिष्ट कर्तव्य (धर्म) होते हैं, जो आध्यात्मिक और सांसारिक विकास पर केंद्रित होते हैं और अंततः मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। यहां चारों आश्रमों का विस्तृत विवरण दिया गया है:

ब्रह्मचर्य (विद्यार्थी चरण): बचपन से लगभग 25 वर्ष की आयु तक, इस चरण में ब्रह्मचर्य, अनुशासन और गुरु के मार्गदर्शन में गहन अध्ययन शामिल होता है, जिससे आध्यात्मिक और व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होता है और जीवन की जिम्मेदारियों के लिए तैयारी होती है।

गृहस्थ (गृहस्थ चरण): विवाह से शुरू होने वाले इस चरण में परिवार, जीविका कमाना, समाज का भरण-पोषण करना और सांसारिक कर्तव्यों (अर्थ, काम, धर्म) का निर्वाह करना महत्वपूर्ण होता है।

वानप्रस्थ (सेवानिवृत्ति का चरण): सांसारिक जीवन से धीरे-धीरे अलग होना, जो आमतौर पर लगभग 50 वर्ष की आयु से शुरू होता है, जिसमें व्यक्ति जिम्मेदारियों को त्यागकर जंगल में जाकर आध्यात्मिक साधना और शास्त्रों के अध्ययन में लीन हो जाता है, और आवश्यकता पड़ने पर परिवार का सहयोग भी लेता है।

संन्यास (त्याग का चरण): पूर्ण वैराग्य का अंतिम चरण, जिसमें एक घुमंतू तपस्वी के रूप में जीवन व्यतीत किया जाता है, जिसका एकमात्र उद्देश्य ईश्वर का अनुभव करना और मोक्ष प्राप्त करना होता है। इस प्रणाली का उद्देश्य व्यक्तियों को अनुशासित, नैतिक जीवन जीने का मार्गदर्शन करना है, जिससे सांसारिक कर्तव्यों और आध्यात्मिक अनुभूति के बीच संतुलन बना रहे, और अंततः आत्म-साक्षात्कार प्राप्त किया जा सके।

60, 70, 80, 90 और 100 वर्ष की उम्र का जश्न मनाना :- किसी ने एक बार पूछा: "हम 60, 70, 80, 90 और 100 जैसी उम्र का इतना भव्यता से जश्न क्यों मनाते हैं? क्या ये संख्याएँ आध्यात्मिक हैं, या ये सिर्फ सांस्कृतिक परंपराएं हैं?" इसका उत्तर महाभारत की एक शक्तिशाली कहानी में है–राजा ययाति की कहानी। ययाति ने अपने जीवन को पूरी तरह जीया–शक्ति, सुख, सफलता, सब कुछ। लेकिन जब वृद्धावस्था अचानक आई, तो उसने उसे गहराई से हिला दिया। गहन चिंतन के बाद, उसने एक गहन सत्य को समझा: "सुख की सीमाएं होती हैं, लेकिन इच्छा कभी समाप्त नहीं होती।" इस एक सच को समझने से उसका जीवन बदल गया। उन्होने वृद्धावस्था को स्वीकार कर लिया और समझा कि जीवन में पाँच अंदरूनी मोड़ होते हैं-जो उम्र पर नहीं, बल्कि समझ पर आधारित होते हैं। आश्चर्यजनक रूप से, ये पांच मोड़ पारंपरिक भारतीय मील के पत्थर 60, 70, 80, 90 और 100 वर्षों के साथ मेल खाते हैं। आइए उन्हें सरल शब्दों में समझें।

60 यानी 'षष्टि' : मन संग्रह से समझ की ओर बदलता है लगभग । 60 वर्ष की उम्र में कुछ बदल जाता है–शरीर में नहीं, बल्कि प्राथमिकताओं में। सवाल यह उठता है, "मैं और कितना पा सकता हूं ?" यह एक ऐसी स्थिति है जहाँ बड़ी तस्वीर दिखाई देने लगती है। आप महसूस करते हैं कि जिन कई चिंताओं को आपने सँभाले रखा था, वे अनावश्यक थीं। आपने जो प्रेम दिया वह

वास्तविक रूप से महत्वपूर्ण था। और जीवन की बागडोर हमेशा से ही एक रहस्यमय, दयालु शक्ति द्वारा संभाली जा रही थी ।

सौ वर्ष की आयु तक पहुंचते –पहुंचते व्यक्ति कर्म और आकांक्षाओं से नहीं, बल्कि केवल अपनी उपस्थिति से पहचाना जाता है।

* **सार*** हमारे ऋषियों ने उम्र का उत्सव नहीं मनाया। उन्होंने उम्र के साथ आने वाले आंतरिक परिवर्तन का उत्सव मनाया।

- 60- षष्टि पूर्ति –प्राथमिकताएँ बदल जाती हैं ।
- 70- सप्तति – शांति ही शक्ति बन जाती है ।
- 80- उपस्थिति ही उपचार बन जाती है ।
- 90- नवति – अहंकार शांतिपूर्वक घुल जाता है ।
- 100 – शत आयु – जीवन पूर्णता को प्राप्त करता है ।

उम्र गिरावट नहीं है । उम्र एक परिष्करण प्रक्रिया है - जिसके माध्यम से ज्ञान गहराता है, कोमलता बढ़ती है और कृपा सहज रूप से बनी रहती है।

उम्र का बढ़ना यह नहीं दर्शाता कि जीवन घट रहा है; इसका अर्थ यह है कि जीवन अधिक शुद्ध, बौद्धिक एवं सौम्य बन रहा है ।

इस प्रकार षष्टि से शतायु तक की यात्रा उम्र की नहीं, बल्कि चेतना के क्रमिक परिष्कार की यात्रा है– जहाँ जीवन कम नहीं होता बल्कि पूर्णता की ओर बढ़ता है और शांत, सौम्य और प्रकाशमान होता जाता है।

के ज्योति
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

"आप कितनी कीमत की उम्मीद कर रही हैं?"

सुमा, केरल के एक छोटे से गाँव में रहती थी। वह एक विधवा थी और उसकी उम्र करीब पचास के आसपास थी । तेरह साल पहले, जब उनके पति का निधन हुआ, तो उनके पास सिर्फ़ यादें, ज़िम्मेदारियाँ और नेशनल हाईवे के किनारे स्थित दस सेंट ज़मीन का एक छोटा-सा टुकड़ा रह गया। यही उनके पति की ओर से छोड़ी गई एकमात्र संपत्ति थी।

पाँच साल तक डायलिसिस उपचार चलने के बाद उनके पति की मृत्यु हुई। इलाज के भारी खर्चों के बाद, जीवन भर के सहारे के रूप में वही ज़मीन बची।

वह ज़मीन कभी बिक्री के लिए नहीं थी।

फिर भी लगभग हर महीने, अलग-अलग फोन नंबरों से, उससे वही सवाल पूछा जाता रहा:

"आपकी ज़मीन बिक्री के लिए है। आप कितनी कीमत चाहती हैं?"

सुमा मना कर देती थीं।

वह हमेशा मना ही करती रहीं।

शुरुआत में उन्होंने इन कॉल्स को नज़रअंदाज़ किया। बाद में ये कॉल्स उन्हें परेशान करने लगीं। अजनबियों को उनका नंबर कैसे मिला? किसने कहा कि उनकी ज़मीन बिक्री के लिए है? उन्हें कभी कोई जवाब नहीं मिला। सिर्फ़ कॉल्स आती रहीं — महीने दर महीने, साल दर साल।

अपनी आजीविका के लिए कुछ करने की उम्मीद में, सुमा ने अपनी ज़मीन पर एक छोटी दुकान बनाने का निर्णय लिया। उन्होंने पंचायत से संपर्क किया, सभी प्रक्रियाएँ पूरी कीं और निर्माण की अनुमति प्राप्त की। शांत दृढ़ता के साथ उन्होंने ज़मीन की तैयारी का कार्य शुरू किया।

तभी उन्हें पता चला कि मिट्टी के नीचे चट्टान है। उसे हटाए बिना निर्माण असंभव था।

उन्होंने सभी आवश्यक दस्तावेज़ों के साथ भूविज्ञान विभाग में आवेदन किया। स्थल निरीक्षण के बाद उनकी फ़ाइल राजस्व मंडल अधिकारी (RDO) को भेज दी गई। और वहीं समय जैसे ठहर गया।

उनका आवेदन महीनों तक लंबित रहा। फ़ाइल एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय घूमती रही – ग्राम कार्यालय, पंचायत, डक्र्ग, तहसीलदार, भूविज्ञान विभाग, और फिर वापस। राजस्व विभाग के अंतर्गत छह स्तरों पर ज़मील का निरीक्षण हुआ। हर निरीक्षण करने वाला अधिकारी सरकारी वाहन के पेट्रोल के नाम पर पैसे माँगता था। वे साइट पर आते, सड़क पर खड़े होकर ज़मीन को दूर से देखते, कुछ तस्वीरें लेते और चले जाते - बिना ज़मीन में कदम रखे।

हालाँकि ज़मीन सिर्फ़ दस सेंट की थी, फिर भी बार-बार निरीक्षण होते रहे। हर बार जवाब एक ही होता:

भावना

"और स्पष्टता चाहिए।"

किसी ने कभी नहीं बताया कि किस बात की स्पष्टता चाहिए।

अनगिनत चक्कर लगाने के बाद, सुमा अंततः डक्र्र से मिलीं। उन्हें निर्देश दिया गया कि वे सभी पड़ोसी ज़मीन मालिकों से ₹०० के स्टांप पेपर पर अनापत्ति प्रमाण पत्र (NOC) प्राप्त करें। कई पड़ोसी अलग-अलग ज़िलों में रहते थे। अपनी उम्र और सीमित साधनों के बावजूद, सुमा ने उनसे मिलने के लिए कई यात्राएँ कीं, पते ढूँढे और मदद की गुहार लगाई।

हर पड़ोसी ने उनकी स्थिति को समझा। सभी ने हस्ताक्षर किए।

जब उन्होंने दस्तावेज़ जमा किए, तो RDO ने रासायनिक ब्लास्टिंग के लिए NOC स्वीकृत कर दिया। लेकिन सुमा को इसकी कोई जानकारी नहीं दी गई। यह स्वीकृति चुपचाप भूविज्ञान विभाग को भेज दी गई और फिर बिना किसी स्पष्टीकरण के वापस ले ली गई।

जब उन्होंने पूछा, तो बताया गया कि NOC रद्द कर दिया गया है।

उन्होंने दोबारा RDO से मिलने की कोशिश की। उन्होंने मिलने से इनकार कर दिया।

कोई और रास्ता न देखकर, सुमा ने एक वकील के माध्यम से पुनरीक्षण याचिका दायर की। एक साल बीत गया। फिर छह महीने और। कुछ भी आगे नहीं बढ़ा।

इसके बाद उन्होंने सूचना के अधिकार (RTI) के तहत आवेदन किया।

उत्तर चौंकाने वाला था। उसमें खुलासा हुआ कि उनके मामले में सही नियमों और प्रक्रियाओं का पालन नहीं किया गया था। उनकी फ़ाइल को अनियमित रूप से संभाला गया था। देरी का कोई कानूनी आधार नहीं था। हर स्तर पर उनसे वह पैसा खर्च करवाया गया, जो वह वहन नहीं कर सकती थीं।

अपनी अंतिम यात्राओं में से एक के दौरान, एक वरिष्ठ अधिकारी – न कठोर, न असंवेदनशील, बल्कि ईमानदार – ने धीरे से सच्चाई बता दी:

"आपको यहाँ न्याय नहीं मिलेगा। कोई आपकी ज़मीन में रुचि रखता है। आपकी ज़मीन पर एक बड़ा प्रोजेक्ट प्रस्तावित है। इसी वजह से आपकी फ़ाइल पर कभी विचार नहीं किया जाता। यहाँ आकर अपना समय मत गँवाइए।"

सुमा चुपचाप घर लौट आईं।

आज भी उनकी फ़ाइल किसी कार्यालय की अलमारी में पड़ी है। उनकी दस सेंट ज़मीन अब भी वैसी ही पड़ी है। फोन कॉल्स आज भी आते हैं –अलग-अलग नंबरों से, वही सवाल:

"आप कितनी कीमत की उम्मीद कर रही हैं?"

सुमा के पास सिर्फ़ एक ही जवाब है।

वह किसी कीमत की माँग नहीं कर रही हैं।

वह न्याय की माँग कर रही हैं।

आशा अजेष,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

कोट्टनकुलंगरा मंदिर - एक दिलचस्प भेंट

मंदिर केवल आध्यात्मिक स्थल ही नहीं हैं; वे सामाजिक स्थल भी हैं। लोग अपने जैसे विश्वास रखने वाले अन्य लोगों से मिलते हैं, त्योहारों को एक साथ मनाते हैं, और स्वयं से परे किसी बृहत संगठन का हिस्सा होने का अनुभव करते हैं।

कई लोगों के लिए, मंदिर जाना पारिवारिक रीति-रिवाजों, संस्कृति या परवरिश से जुड़ा होता है - भले ही उनकी व्यक्तिगत मान्यता लचीली या विकसित हो रही हो। जब हम शाम को किसी मंदिर में जाते हैं, तो वहां के वातावरण के कारण कुछ चीजें लगभग स्वतः ही हमारी नजरों और ध्यान को आकर्षित कर लेती हैं। जैसा दीये और आरती की लौ, धीरे-धीरे उठता हुआ अगरबत्ती का धुआँ और इसकी सुगंध आपको उस पल में खींच लेती है। देवता की सुंदर सजावट – फूल, मालाएँ, नए वस्त्र, कभी-कभी गहने शाम की रोशनी में रंग सचमुच निखरते हैं। घंटियों की आवाज़ - कुछ भी देखने से पहले ही आपकी इंद्रियाँ जागृत हो जाती हैं। प्रार्थना में लीन भक्त- हाथ जोड़े, आँखें बंद, शांत चेहरे... यह दृश्य मन को शांत और शक्तिशाली बना देता है। आरती करते पुजारी- लयबद्ध गतियाँ, घूमती हुई लौ, मंत्रोच्चार। मंदिर की रोशनी -बल्बों या तेल के दीयों की लड़ियाँ स्तंभों और नक्काशी को रोशन करती हैं, जिससे सब कुछ विशेष और शांत दिखता है। गर्भगृह के पास रखे फूल, नारियल, फल।

यदि कोई व्यक्ति विवाह करने की इच्छा रखता है और मंदिर में जाकर वहां मौजूद चेहरों में से किसी को अपने लिए उपयुक्त साथी के रूप में खोजता है... लेकिन इस मंदिर में कुछ अनोखा है... रेशमी साड़ियों में सजी सभी सुंदर महिलाएं दीपक लिए खड़ी हैं, दीपक की सुनहरी रोशनी उन चेहरों पर पड़ रही है जो दीपक की रोशनी से शरमा रहे हैं, और उनके हाथों में विभिन्न रंगों की चूड़ियां हैं जो उनके परिधानों से मेल खाती हैं।

लेकिन रुकिए, ये तो महिलाओं के वेश में पुरुष हैं!!!

पुरुष देवी की पूजा करने के लिए महिलाओं का वेश धारण करते हैं (चमयम)। वे अपने हाथों में जलते हुए दीपक (विलक्कू) लिए रहते हैं। प्रतिभागी साड़ियाँ, स्कर्ट, ब्लाउज, चूड़ियाँ और मेकअप पहनते हैं -कभी-कभी बहुत ही उत्कृष्ट मेकअप होता है। सभी उम्र, जाति और सामाजिक स्थिति के लोग इसमें भाग लेते हैं।

कोट्टनकुलंगारा मंदिर उत्सव केरल की सबसे अनूठी और आकर्षक परंपराओं में से एक है। कोट्टनकुलंगरा देवी मंदिर केरल के कोल्लम जिले के चावरा में है। इष्टदेव भगवती (देवी) हैं, जिनकी पूजा एक बहुत ही विशिष्ट लोक परंपरा में की जाती है। यह

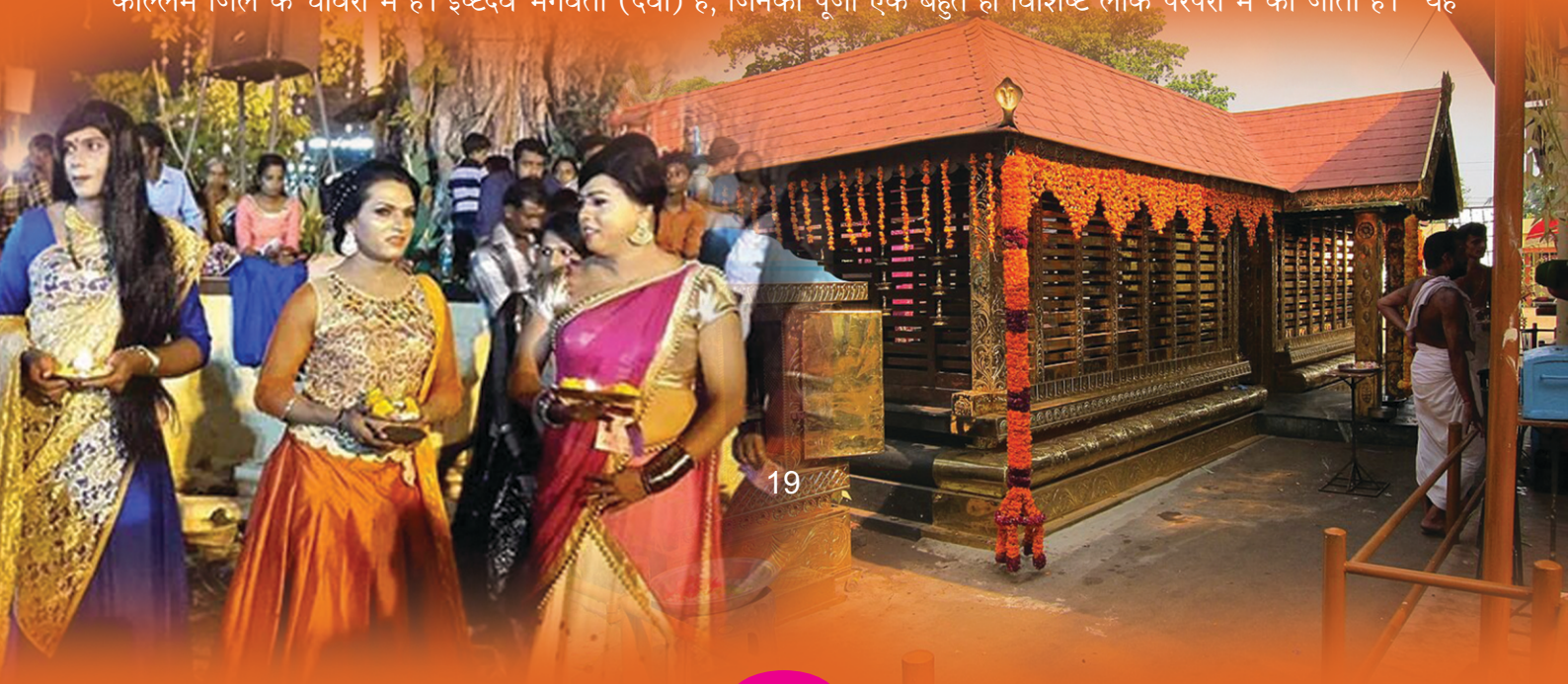

भावना

अनुष्ठान लिंग भेद से परे भक्ति का प्रतीक है, और इस विश्वास का प्रतीक है कि देवी सभी को समान रूप से स्वीकार करती हैं।

पौराणिक कथा के अनुसार सबसे पहले बच्चे पत्थरों की मूर्तियों का उपयोग करके देवी की पूजा करते थे। जब बड़ों ने उन्हें डांटा, तो देवी उनके स्वप्न में प्रकट हुईं और उनसे उचित पूजा करने के लिए कहा। समय के साथ, इस सरल शुरुआत से चमय-विलक्कू अनुष्ठान विकसित हुआ। बच्चों को लिंग भूमिकाओं की कोई अवधारणा नहीं थी। देवी ने दिखाया कि वह किसी भी प्रकार की भक्ति स्वीकार करती हैं। वेशभूषा धारण करना (चमयम) पूजा की चंचल, बालवत उत्पत्ति को दर्शाता है।

केरल के पारंपरिक समाज में, पुरुषत्व को गौरव और अधिकार से जोड़ा जाता था। सार्वजनिक रूप से स्त्री के वेश में रहना सामाजिक रूप से जोखिम भरा माना जाता था, इसलिए देवी के सामने ऐसा करना निर्भीकता, अटूट आस्था और भक्ति के लिए उपहास सहने की तत्परता को दर्शाता था।

यह अनुष्ठान चुपचाप लैंगिक पदानुक्रम, जातिगत बाधाओं और सामाजिक स्थिति को मिटा देता है। एक रात के लिए, हर कोई केवल एक दीपक लिए हुए भक्त बन जाता है। इस त्योहार का आध्यात्मिक अर्थ है अहंकार का त्याग, यानी पहचान और अभिमान को छोड़ देना, लिंग भेद से परे भक्ति और देवी के समक्ष सभी का समान होना।

यह त्योहार साल के मार्च-अप्रैल महीने के दौरान मनाया जाता है। त्योहारों के मौसम में घूमने के लिए यह वास्तव में एक दिलचस्प जगह है।

अनिता अरविंदा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कोच्ची टॉलिक द्वारा महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, चेन्नै, शाखा कोच्ची को 2023-24 के दौरान 100 से अधिक कर्मचारियों की श्रेणी में उत्तम राजभाषा कार्य के लिए में पंचम पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

15.01. 2026 को कोच्ची टॉलिक द्वारा आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में भाग लेकर श्रीमती सिन्धु नायर, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने ट्रोफी एवं प्रमाणपत्र ग्रहण किया ।

कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय)

गृह मंत्रालय

राजभाषा विभाग

वर्ष 2023-24 के लिए राजभाषा रोलिंग ट्रॉफी

महा निदेशक लेखा परीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय,
चेन्नै, शाखा कार्यालय, कोच्ची
श्रेणी - केन्द्र सरकारी कार्यालय (101 से अधिक कार्मिक)
को उत्तम राजभाषा कार्य के लिए कोच्ची टोलिक की ओर से यह

प्रशस्ति पत्र (पंचम)

सहर्ष प्रदान किया जाता है।

विशेष उपलब्धि - उत्तम राजभाषा कार्य (2023 - 24)

कोच्ची
दि. 15.01.2026

अध्यक्ष
कोच्ची न रा का स (कार्या.)

PEEYUSH JAIN, I.R.S
प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, केरल & लक्षद्वीप
PRINCIPAL CHIEF COMMISSIONER OF INCOME TAX
KERALA & LAKSHADWEEP
कोच्ची / KOCHI

हमारे शाखा कार्यालय कोच्ची में 'ओणम' समारोह

केरल का प्रमुख फसल पर्व 'ओणम' हमारे शाखा कार्यालय, कोच्ची में अत्यंत उत्साह और पारंपरिक भावना के साथ मनाया गया। यह आयोजन केरल कर समृद्ध सांस्कृतिक विरासत तथा ओणम द्वारा प्रतिपादित एकता, साझेदारी और सामूहिकता के मूल्यों का सुंदर प्रतिबंब था ।

कार्यालय परिसर को पारंपरिक पूक्कलम (फूलों की रंगोली) और उत्सव सजावट से सुसज्जित किया गया, जिससे वातावरण आनंदमय एवं आकर्षक बन गया । अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पारंपरिक केरल परिधान में भाग लेकर समारोह की शोभा बढ़ाई ।

कार्यक्रम की शुरुआत ओणम के महत्व और राजा महाबली की कथा पर संक्षिप्त संबोधन से हुई, जो समानता, सरलता और सुशासन के मूल्यों का प्रतीक है । यह आयोजन दैनिक कार्यों से हटकर आपसी संवाद और सौहार्द बढ़ाने का एक उत्तम अवसर सिद्ध हुआ।

समारोह का मुख्य आकर्षण सामूहिक भोजन रहा, जिसमें प्रत्येक कर्मचारी अपने घर से बना हुआ भोजन लेकर आया और सभी के साथ साझा किया । पारंपरिक एवं घरेलू व्यंजनों की विविधता ने साझा करने की भावना को सजीव किया । एक साथ बैठकर भोजन करने से आपसी भाईचारा और टीम भावना और अधिक सुदृढ़ हुई ।

हमारे शाखा कार्यालय कोच्ची में आयोजित ओणम समारोह सांस्कृतिक सरसता और टीमवर्क का उत्कृष्ट उदाहरण रहा । सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सक्रिय भागीदारी और सहयोग से यह आयोजन सफल एवं स्मरणीय बन गया, जिससे कार्यस्थल में सकारात्मक, समावेशी और आनंपूर्ण वातावरण का सृजन हुआ ।

प्रदीप कुमार
डीईओ

कार्यालय गतिविधियां -
मनोरंजन क्लब- ओणम, समारोह 2025

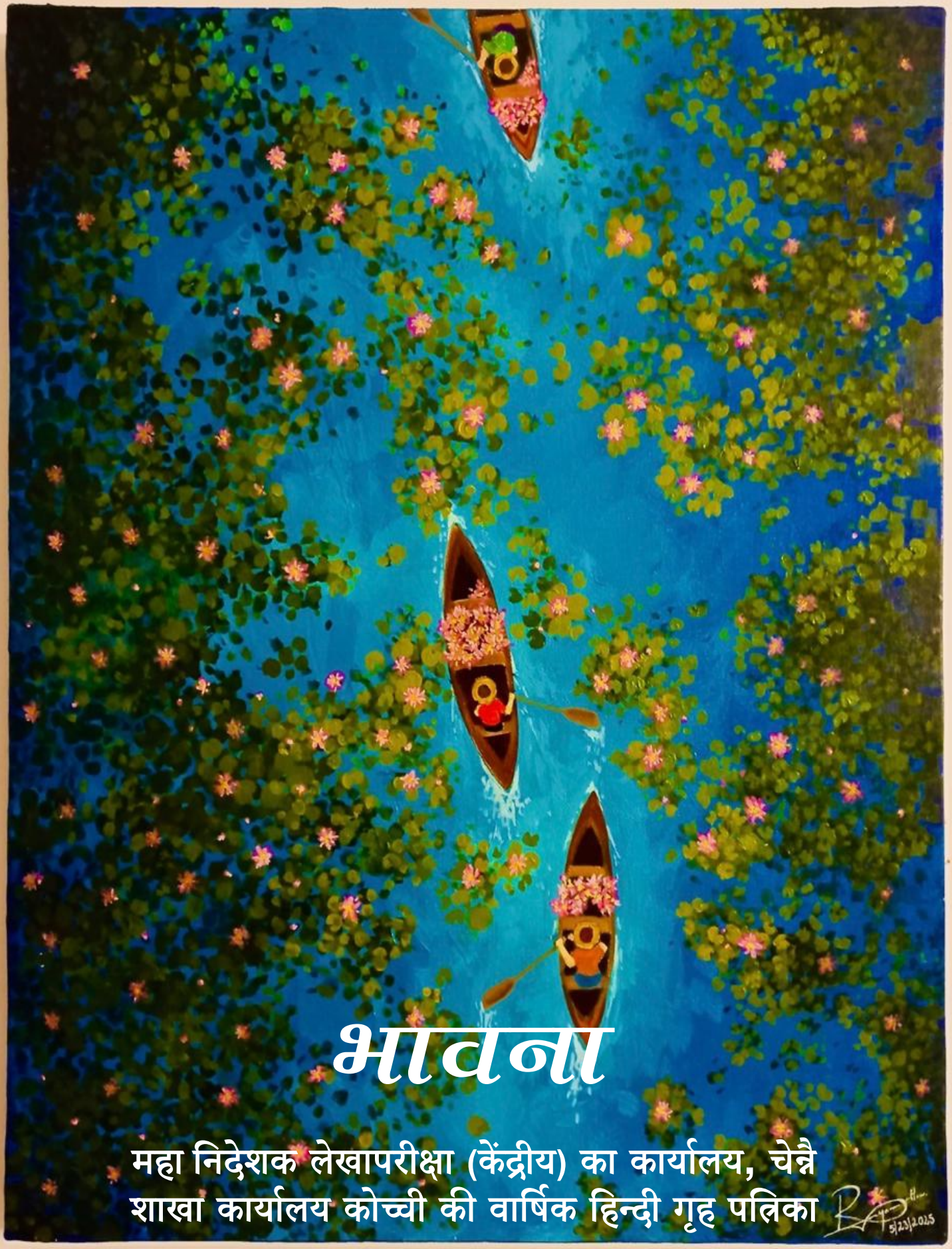

भावना

महा निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, चेन्नै
शाखा कार्यालय कोच्ची की वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका